इटली की लोककथाएं
अनुवादक : डा. मदनलाल

इटली की लोककथाएँ
(FIABE ITALIANE)

अनुवाद

डॉ. मदनलाल

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन

'लोगो' वाणी प्रकाशन : मक़बूल फ़िदा हुसेन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
वाणी प्रकाशन, अशोक राजपथ (पटना कॉलेज के सामने), पटना (बिहार)

FIABE ITALIANE

Traduttore by Dr. Madan Lal

Folk of Italy

ISBN : 81-7055-332-6

संस्करण : 1999

आवृत्ति संस्करण : 2011

आभार : भारत स्थित इतालवी राजदूतावास, नई दिल्ली

मूल्य : 60/-

वाणी प्रकाशन

फोन : 0091#11#23273167, फोन व फैक्स 23275710
ई-मेल : vaniprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.vaniprakashan.in

आर. टेक ऑफसेट दिल्ली 110 095 में मुद्रित

दो शब्द

यह पुस्तक इटली देश में प्रचलित कुछ लोककथाओं का संग्रह है । इतालवी लोग भले ही ईसाई धर्म के अनुयायी हैं किन्तु मानव मूल्य तथा बुराई पर अच्छाई की जीत सभी स्थानों या देशों में एक समान ही है, ऐसा इस कहानी संग्रह में भली भांति प्रकट होता है ।

कोई 30 वर्ष पहले मुझे इटली देश में जाकर वहां की भाषा तथा साहित्य पढ़ने का अवसर मिला । गाहे-बगाहे कुछ इतालवी कहानियाँ भी पढ़ता रहा । कोई तीन-चार वर्ष पहले जब फिर वहां गया तो एक पुस्तक विक्रेता के यहां श्री इतालो कालवीनो (ITALO CALVINO) द्वारा संग्रहीत तथा प्रतिलिपित पुस्तक फ़ियाबे इतालियाने (FIABE ITALIANE अर्थात् इटली की लोककथाएँ) को देखा । मन में विचार आया कि इस पुस्तक की लोककथाएँ तो बहुत ही रुचिकर तथा शिक्षाप्रद हैं, क्यों न इनमें से कुछ एक को हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी ज्ञाता पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत किया जाए । अतः इस पुस्तक के दोनों भागों को खरीद लिया । भारत में वापस आकर जैसे-जैसे समय मिलता गया मैं कुछ कथाओं का सीधे इतालवी भाषा से हिन्दी में अनुवाद करता गया । भारत स्थित इटली के सांस्कृतिक केन्द्र के आंशिक आर्थिक सहयोग से इन कहानियों को अब पुस्तक रूप मिल पाया है ।

प्रस्तुत पुस्तक में निम्नलिखित तीन कहानियों को छोड़कर बाकी सभी उपर्युक्त पुस्तक से ली गई हैं । दो कहानियां, 'गेहूं के तीन दाने' तथा 'डण्डे का कमाल' एक अन्य पुस्तक ले फियाबे दी गूईदो गोत्सानो (LE FIABE DI GUIDO GOZZANO अर्थात् गूईदो गोत्सानो की लोककथाएँ) से हैं । तीसरी कहानी श्री जोवन्नी बोक्काच्चो (GIOVANNI BOCCACCIO) द्वारा लिखित 'हाज़िरजवाब नौकर' (CHICHIBIO,

कीकीबिओ) है । प्रायः सभी कहानियां मध्यकालीन युग से सम्बन्धित हैं जब इटली में सामन्तवादी प्रथा प्रचलित थी । अतः राजाओं, रानियों, सामन्तों, परियों तथा मायावी चमत्कारों आदि की झलक खूब दिखाई पड़ती है । आशा है पाठकगण इस कहानी संग्रह का रसपान कर आनन्दित होंगे ।

डॉ. मदनलाल

विषय सूची

घुस जा मेरे बोरे में

बहुत समय पहले इटली के एक गांव में एक पिता अपने बारह बच्चों के साथ रहा करता था। उस गांव के आस-पास अकाल पड़ गया। सभी लोग दाने-दाने के लिए तरसने लगे। उस पिता ने भी अपने पुत्रों से कहा, "मेरे बच्चो, तुम्हें खिलाने के लिए अन्न का एक दाना भी मेरे पास है नहीं। तुम दुनिया में कहीं और जाकर अपना भाग्य आज़माओ। निश्चय ही तुम कहीं और, इस अभागे घर से सुखी जीवन बिताओगे।"

जब सभी ग्यारह बड़े भाई गांव छोड़कर किसी दूसरी जगह जाने के लिए तैयार हो गये तो सब से छोटा, बारहवां जो कि लंगड़ा था, ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

"मैं तो लंगड़ा कर चलता हूं और सबसे छोटा हूं, आप सबके साथ चलकर कैसे कुछ कमा सकूंगा ?" उसने रोते-रोते कहा।

"मत रो, मेरे बच्चे", पिता ने उससे कहा। "तू भी इन ग्यारह भाइयों के साथ जा, जो कुछ ये कमाएंगे तुम से मिल-बांट खाएंगे।"

इस प्रकार उन बारह बच्चों ने अपने पिता से मिल-जुलकर रहने का वायदा किया और वहां से विदा हो गये। वे पूरा दिन चलते रहे। दूसरे दिन भी चलते रहे। लंगड़ा भाई अक्सर बहुत पीछे रह जाता था। तीसरे दिन सबसे बड़े भाई ने कहा—"यह हमारा छोटा भाई, फ्रांको सदा पीछे रह जाता है, हमारे लिए बेकार का सिरदर्द बना हुआ है ! क्यों न इसे यहीं सड़क के किनारे छोड़ जाएं। शायद यह उसके लिए भी अच्छा रहे क्योंकि संभव है कोई नेक दिल व्यक्ति इस पर तरस खाकर इसका कल्याण कर दे।"

इस प्रकार वे ग्यारह भाई जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गये। रास्ते में वे भीख मांग कर अपना गुजारा कर लेते। चलते-चलते वे समुद्र तट पर जा पहुंचे। बन्दरगाह पर एक नौका किनारे से बंधी थी। उन लोगों ने सोचा—'यदि हम इस नौका में बैठकर सारदीनिया द्वीप पहुंच जाएं तो कितना अच्छा रहे! उस द्वीप पर कोई अकाल नहीं है और अच्छा कमाने-खाने को मिलेगा।'

उन भाइयों ने उस नौका को खोला और उसमें सवार होकर सारदीनिया द्वीप की ओर खेने लगे । जैसे ही वे गहरे समुद्र में पहुंचे, एक बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया । नौका उलट गई और सभी भाई समुद्र में डूब गये ।

उधर पीछे लंगड़ा फ्रांको थका-हारा अपने भाइयों को सड़क पर ढूंढ़ रहा था । जब उसे कोई भाई दिखाई न दिया तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा । निराश होकर वह सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठ गया और रोते-रोते सो गया । उस जगह की परी ने पेड़ की चोटी से यह सब दृश्य देखा था । जैसे ही फ्रांको घास पर सो गया परी पेड़ से उतर आई । उसने पास से कुछ जड़ी-बूटी इकट्ठी कीं । फिर उसका लेप बनाकर फ्रांको की लंगड़ी टांग पर मल दिया । थोड़ी देर में फ्रांको की लंगड़ी टांग ठीक हो गई । तब परी ने एक भद्दी-सी सूरत वाली बुढ़िया का रूप धारण कर लिया और फ्रांको के पास बैठ गई ।

कुछ देर बाद फ्रांको की आंख खुली । वह कपड़े झाड़ कर खड़ा हो गया । एक-दो कदम चला तो उसकी हैरानी का कोई ठिकाना न रहा । उसे लगा कि उसकी लंगड़ी टांग ठीक हो गई थी और वह बाकी लोगों की तरह चल-फिर सकता था । उसने इधर-उधर दृष्टि घुमाई । बुढ़िया को पास ही बैठा देखकर बोला ।

"वृद्धमाता, क्या आपने किसी वैद्य को इधर देखा है ?"

"तुम उसे क्यों ढूंढ़ना चाहते हो ?" बुढ़िया ने पूछा ।

"मैं उसका धन्यवाद करना चाहता हूं । वह सचमुच बहुत ही योग्य वैद्य है । देखो न, मेरीलंगड़ी टांग उसने कैसे ठीक कर दी है जब मैं सो रहा था ।"

"तुम्हारी लंगड़ी टांग तो मैंने ठीक की है ।" बुढ़िया ने कहा, "मैं सब प्रकार की जड़ी-बूटियों को अच्छी तरह जानती हूं । उस बूटी को भी जिससे लंगड़ी टांग अच्छी होती है ।"

फ्रांको यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । वह झट बुढ़िया के गले लिपट गया । उसके झुर्रियाँ पड़े गालों को चूमने लगा । बड़े प्यार से वह बोला—

"मैं कैसे आपके एहसान का बदला चुका सकता हूं, बड़ी अम्मां ? यह गठरी जो आप के पास है, अब इसे मैं उठा कर चलूंगा और वहां तक छोड़कर

आऊंगा जहां तक आपको जाना है । बताइए, कहां जाना है आप को ?"

यह कहकर वह बुढ़िया की गठरी उठाने के लिए झुका । किन्तु जैसे ही वह गठरी लेकर ऊपर उठा वह चकित रह गया । उस अधेड़ बुढ़िया की जगह अब वहां पर एक अत्यन्त सुन्दर युवती थी । उसके सुनहरे बाल कन्धों तक लटक रहे थे । वह रेशमी कपड़े पहने थी । जिन पर सोने की ज़री का काम था और हीरे जवाहरात की मालाएं खूब चमक रही थीं । फ्रांको का मुंह खुला का खुला रह गया । वह उस युवती के पैरों में पड़ गया ।

"उठो, अच्छे लड़के, मैं वास्तव में परियों की रानी हूं । मैंने देख लिया है कि तुम बहुत भले और कृतज्ञ हो । तुम अपनी कोई दो इच्छाएं बताओ । मैं उन्हें झट पूरा करूंगी ।" परी ने कहा ।

थोड़ी देर सोचकर फ्रांको बोला, "मुझे एक ऐसा बोरा चाहिए जिसमें हर वह चीज आ जाए जिसे मैं चाहूं ।"

"तथास्तु ! ऐसा बोरा तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा । तुम्हारी एक और इच्छा बाकी है । मांगो, और क्या चाहिए ?" परी ने पूछा ।

"मुझे एक ऐसा डण्डा चाहिए जो वे सब काम करे जिसका मैं उसे आदेश दूं," फ्रांको ने मांग की ।

"तुम्हें ऐसा डण्डा भी जरूर मिलेगा," परी ने कहा और फिर वह अंतर्धान हो गई । उसी समय फ्रांको के पैरों के पास एक बोरा और एक डण्डा दोनों पड़े थे ।

उन दोनों वस्तुओं को देखकर फ्रांको मारे खुशी के फूले नहीं समा रहा था । उसे बड़े ज़ोर की भूख सता रही थी । उसने सोचा, क्यों न इस बोरे की परख की जाए । वह ज़ोर से बोला, 'गरमा-गरम रोटी और सब्जी इस बोरे में आ जाए ।' पम,पम, झट रोटी और सब्ज़ी उस बोरे में आ गए । फ्रांको ने खूब पेट भर कर भोजन किया ।

फिर वह आगे बढ़ गया । अब उसका लंगड़ाना बन्द हो चुका था । चलते-चलते वह एक नगर में पहुंच गया । वहां पर जुआ खेलने का एक बड़ा अड्डा था । फ्रांको के पास अभी तक एक पैसा भी नहीं था । उसने झट बोरे को आदेश दिया— 'मुझे एक हज़ार मोहरें चाहिएं ।' और उसी समय बोरे में छन-छन करती एक हज़ार सोने की मोहरें भरी पड़ी थीं । उसने

जैसे ही फ्रांको घास पर सो गया परी पेड़ से उतर आई । उसने पास से कुछ जड़ी-बुटी इकट्ठी की । फिर उसका लेप बनाकर फ्रांको की लंगड़ी टांग पर मल दिया। थोड़ी देर में फ्रांको की टांग ठीक हो गई ।

फिर सुन्दर कीमती कपड़े पहन कर नगर में यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह एक राज्य का राजकुमार होने की हैसियत से बड़ी तगड़ी रकम के साथ जुए की बाजी खेलेगा ।

उन दिनों उस नगर पर एक शैतान की विशेष दृष्टि थी । एक सुन्दर युवक का रूप धारण कर वह बड़ी चालाकी के साथ अपने ताश के पत्ते फेंकता था और हर बाज़ी जीत जाता था । जब उसके विरोधी खिलाड़ी सब रुपए-पैसे जुए में हार जाते थे तब वह उन्हें अपनी आत्मा दांव पर लगाने के लिए कहता था और वे अपनी आत्माएं भी उसके आगे हार जाते थे । शैतान के कानों में भी इस धनी राजकुमार के उस नगर में आने की खबर पहुंची । अपना रूप बदल कर शैतान राजकुमार को मिलने चल दिया ।

"कुंवर साहिब, क्षमा करना मैं आप से मिलने चला आया हूं । बहुत बड़े जुए के खिलाड़ी होने की आपकी प्रसिद्धि इतनी दूर-दूर तक फैली है कि मैं आपसे मिले बिना न रह सका," शैतान बोला ।

"आप ऐसे ही मेरी तारीफ़ के पुल बांध रहे हैं ।" फ्रांको ने कहा, "सच तो यह है कि मैंने कभी ताश के पत्तों को ठीक से पकड़ना भी नहीं सीखा । तो भी, आप जैसे निपुण खिलाड़ी से कुछ सीखने के लिए कोई एक आध बाज़ी तो मैं ज़रूर खेलना चाहता हूं । मुझे विश्वास है कि आप की कुशल चालों से कुछ सीख कर एक दिन अच्छा खिलाड़ी ज़रूर बन जाऊंगा ।"

यह उत्तर सुन कर शैतान इतना अधिक सन्तुष्ट हो गया कि वह अपनी सुध-बुध भूल गया । जल्दी में विदा होते समय शिष्टाचार के नाते जब वह झुक कर ऊपर उठा तो उसका बकरेवाला पैर फ्रांको ने देख लिया । 'आह! यह चाचा शैतान है जो मुझे झांसा देने आया है । अच्छा बच्चू, अब तुझे भी सबक सिखाना पड़ेगा । तू क्या याद रखेगा ।' फ्रांको ने मन ही मन सोचा ।

अगले दिन प्रातः फ्रांको जुएखाने में पहुंचा । वहां पर बहुत शोरगुल था और सभी लोग एक कोने में इकट्ठे थे । फ्रांको ने उस भीड़ के बीच जाकर देखा कि एक युवक की छाती पर गहरा ज़ख्म था और खून निकल रहा था । एक व्यक्ति से उसने पूछा—

"क्यों भई, इसे क्या हुआ है ?"

"यह एक जुए का खिलाड़ी है । इसने सब कुछ जुए में लुटा दिया है । अभी थोड़ी देर पहले इसने स्वयं अपनी छाती में छुरा घोंपकर आत्महत्या कर ली है ।" कई लोगों ने उसे बताया ।

सभी जुआरियों के मुख पर उस युवक की दुर्दशा देख कर उदासी छाई हुई थी । फ्रांको ने देखा कि उस जमघट के बीच केवल एक व्यक्ति था जो अपनी मूंछों के नीचे तिरस्कार भरी दृष्टि से मुस्करा रहा था । ज़रा ध्यान से देखने पर फ्रांको ताड़ गया कि यह वही शैतान था जो एक दिन पहले उससे मिलने आया था ।

"जल्दी करो ।" शैतान बोल रहा था । "जल्दी इस अभागे को यहां से हटवाओ ताकि हम अपना खेल शुरू करें ।" थोड़ी देर में युवक की लाश को नगरपालिका-कर्मचारी उठा कर ले गए । जुए की बाज़ी फिर शुरू हो गई ।

फ्रांको भी खेल की मेज़ पर जा बैठा । शैतान ने उसके साथ बाज़ी शुरू की । फ्रांको, जिसको उस दिन पत्ते भी पकड़ना नहीं आता था, सब बाज़ियां हार गया । दूसरे दिन भले ही उसने खेल के कुछ दांव-पेंच सीख लिए थे किन्तु शैतान की चालाकी भरी चालों के सामने फिर हार गया । तीसरे दिन वह इतनी बुरी तरह से हारा कि सभी ने यही समझा कि वह अब सदा के लिए तबाह-बरबाद हो गया । किन्तु फ्रांको के लिए यह तबाही कुछ भी नहीं थी क्योंकि बोरा उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए सदा तत्पर था । वह बोरे में उतनी सोने की मोहरें फिर पा लेता जितनी कि उसे चाहिए थीं ।

तीसरे दिन जब वह बहुत बुरी तरह हारा था तो शैतान ने भी सोच लिया था कि भले ही वह दुनिया का बहुत बड़ा धनी व्यक्ति था पर अब उसकी कमर इतनी टूट चुकी होगी कि फिर कभी खड़ा नहीं हो सकेगा । इसलिए वह फ्रांको को जुआघर के बाहर एक तरफ ले जाकर बोला, "श्रीमान कुंवर साहिब, मुझे आपकी बरबादी पर आप से पूरी-पूरी सहानुभूति है । किन्तु मैं आपको एक शुभसमाचार देना चाहता हूं । यदि आप बुरा न मानें तो मेरा एक सुझाव है जिससे आप अपना आधा खोया हुआ धन वापस ले सकते हैं ।"

"वह कैसे ?" फ्रांको ने शैतान से पूछा ।

शैतान ने अपने चारों ओर देखा फिर चुपके से फ्रांको के कान के पास बोला—

"आप अपनी आत्मा मुझे बेच दें ।"

"आह, बदमाश, यह सुझाव है जो तू मुझे देता है ?" फ्रांको ने चिल्लाकर कहा । "अरे शैतान, कूद के घुस जा मेरे बोरे में ।"

फ्रांको ने झट अपने बोरे का मुंह खोल दिया । शैतान ने चिढ़ाते हुए दांत दिखाए । उसने मुंह उठाकर भागना चाहा, किन्तु बोरे के ज़ोर के आगे उसकी एक न चली । औंधे मुंह खुले बोरे के अन्दर आ गिरा । फ्रांको ने झट बोरे का मुंह बन्द कर दिया और अपने डण्डे को आदेश दिया—

"कर ज़रा इसकी जमकर पिटाई ।"

डण्डा ज़ोर-ज़ोर से बोरे पर अपना वार करने लगा । शैतान बोरे के अन्दर खूब हिल-डुल रहा था । डण्डे के कुछ प्रहारों के बाद वह अपने भाग्य को कोस रहा था । रो-रो कर वह गिड़गिड़ाने लगा, "मुझे बाहर निकलने दो । डण्डे को रोक दो नहीं तो मैं अन्दर ही मर जाऊंगा !!"

"अरे हां, अब तू मर रहा है ? तू क्या सोचता है कि मैं तेरे साथ बुरा कर रहा हूं ?" फिर फ्रांको ने डण्डे को और आदेश दिया, "और ज़ोर से करो इसकी पिटाई ।"

कोई तीन घण्टे की उसकी ठुकाई के बाद फ्रांको बोला, "बस, बस, आज के लिए इतना ही काफ़ी है ।"

"तुम मुझे रिहा करने के लिए क्या चीज़ चाहते हो ?" शैतान ने फ्रांको को, पीड़ा से कराहते हुए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने का प्रस्ताव किया ।

"तो सुन ध्यान से । यदि तुझे अपनी रिहाई चाहिए तो उन सब व्यक्तियों को तत्काल फिर जीवित कर जिनकी तूने जुआघर में हरा कर हत्या की है ।" फ्रांको ने अपनी शर्त रखी ।

"ठीक है, मैं ऐसा ही करता हूं । मेरा यह वचन अटल समझो," शैतान ने आश्वासन दिया ।

"तब निकल बाहर, किन्तु ध्यान रहे कि जो वचन तूने दिया है, यदि तूने ज़रा आना-कानी की तो फिर बोरे के अन्दर आख़िरी सांस ले-लेकर

मरेगा ।" फ्रांको ने कहा ।

फ्रांको ने बोरे का मुंह खोल दिया । पीड़ा से कराहता हुआ शैतान बाहर निकला । फिर भूमि के नीचे घुस गया । थोड़ी देर बाद कुछ युवकों के समूह के साथ बाहर निकल आया । उन युवकों के मुख पीले पड़े हुए थे । आंखें पीड़ा से सूजी हुई थीं । घोर व्यथा के चिन्ह उनके शरीर के रोम-रोम पर प्रकट हो रहे थे ।

"मेरे प्यारे मित्रो," फ्रांको ने उन हतप्रभ युवकों को सम्बोधित किया, "आप लोग जुए में बुरी तरह तबाह हो गये थे । फिर आपने अपनी आत्माएं शैतान के आगे बेच दीं और निराश होकर अपनी हत्या कर ली । अब आपको पुनर्जीवित कराने का एक अवसर मुझे मिला है । यदि आपने फिर वही पहली गलती की तो आपको ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा । इसलिए मुझे वचन दीजिए कि आप जुआ कभी नहीं खेलेंगे, नहीं तो यह जीवन आपको नहीं मिलेगा ।"

"हां, हां, हम सब वचन देते हैं कि आगे से जुआ नहीं खेलेंगे ।" सभी पुनर्जीवित लोग एक साथ बोल उठे ।

"ठीक है, यह एक हजार मोहरें मैं हर एक को देता हूं, जाइए और नेक नीयत से कमा कर अपने जीवन का निर्वाह करिए ।" फ्रांको बोला ।

तब फिर से जीवित हुए युवक सोने की मोहरें लेकर खुशी-खुशी अपने घरों के लिए विदा हुए । मातम मना कर शोक में डूबे उनके परिवार के सदस्यों ने जब उन्हें प्रसन्न होकर फिर लौटते देखा तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा । जिस किसी के वृद्ध माता-पिता मौत की खाट पर लेटे हुए थे वे फिर से बिजली के झटके की तरह उठ खड़े हुए । सब ओर प्रसन्नता का वातावरण था ।

फ्रांको को भी अपने बूढ़े पिता की याद सताने लगी । उसने अपने गांव जानेवाले मार्ग पर चलना शुरू कर दिया । अभी थोड़ी ही दूर आगे गया था तो उसने देखा कि सड़क के किनारे एक लड़का निराशा से अपना सर पीट रहा था । फ्रांको ने वहीं रुक कर उससे पूछा—

"क्या बात है भले युवक ? तुम क्यों रो रहे हो ?"

"मेरा पिता एक लकड़हारा है । हमारे घर में वही एक कमाने वाला

व्यक्ति है । आज प्रातः जब वह एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ कर लकड़ी काट रहा था कि उसका पैर फिसल गया । पेड़ से गिरते ही उसका एक बाजू टूट गया है । मैं नगर में भाग कर डाक्टर को बुलाने गया । किन्तु डाक्टर जानता है कि हम बहुत ग़रीब हैं । उसने मेरे पिता का इलाज करने से इंकार कर दिया है," वह लड़का बोला ।

"तो यह बात है । तुम शान्ति रखो । उसका इलाज मैं करूंगा ?" फ्रांको ने उसे आश्वासन दिया ।

"तो आप क्या एक डाक्टर हैं ?" लड़के ने पूछा ।

"नहीं, लेकिन मैं उस डाक्टर को अभी यहीं लेकर आता हूं । क्या नाम है उसका ?"

"उसका नाम डाक्टर पानक्राज़ो है ।"

"ठीक है, मैं अभी आया उसके साथ ।" यह कहकर फ्रांको उस लालची डाक्टर के पास चला गया । नगर में डाक्टर के सामने जाकर अपने बोरे का मुंह खोल दिया और आदेश दिया ।

"डाक्टर पानक्राज़ो, कूद के घुस जा मेरे बोरे में ।"

झट वह डाक्टर उछल कर मुंह के बल बोरे में अपने सब यन्त्रों सहित आ गिरा । फ्रांको ने झट बोरे का मुंह बन्द कर दिया और कहा, "डण्डे, कर ज़रा इसकी ऊपर से पिटाई ।" और फ्रांको के डण्डे ने बोरे के ऊपर अपना करतब दिखाना शुरू कर दिया ।

"बचाओ, बचाओ, मैं मर गया, मेरी हड्डी-पसली टूट रही हैं ।" डाक्टर चिल्ला रहा था ।

"यदि तुम अपनी मुक्ति चाहते हो तो मुझे वचन दो कि उस लकड़हारे का मुफ्त़ इलाज करोगे जिसका बाजू टूट गया है और किसी गरीब आदमी को पैसों के लिए कभी नहीं सताओगे ।" फ्रांको ने डाक्टर से आश्वासन मांगा ।

"मैं वैसा ही करूंगा जैसा आप चाहते हैं ।" डाक्टर ने विश्वास दिलाया ।

"तो निकलो बोरे से बाहर ।" फ्रांको ने बोरे का मुंह खोल दिया ।

बोरे से बाहर निकल कर वह डाक्टर झट उस लकड़हारे के घर उसका

मुफ्त़ इलाज करने पहुंच गया ।

इस प्रकार फ्रांको लोगों के दुःख दूर करता हुआ चलते-चलते अपने गांव पहुंच गया । वहां देखा कि भुखमरी फैली हुई थी । उसके पिता का देहान्त हो चुका था । उसने बोरे की सहायता से लोगों को तरह-तरह के भोजन खिलाकर खूब सहायता की । जब उसके गांव से अकाल दूर हो गया और फिर से स्थिति अच्छी हो गई तो उसने अपना गांव छोड़ दिया ताकि लोग उस पर ही निर्भर होकर कहीं आलसी और निकम्मे न हो जाएं ।

सज्जन और सुहृदय फ्रांको ने जीवन के अन्तिम क्षण तक कभी अपने बोरे और डण्डे का दुरुपयोग नहीं किया । जनता की भलाई और सेवा ही उसका एक मात्र लक्ष्य था । लोग उसे सदा उसके शुभ कार्यों के लिए याद करते हैं ।

* * * * *

घमण्ड का सिर नीचा

दो व्यापारी थे । उनके घर एक-दूसरे के आमने-सामने थे । एक के सात बेटे थे और दूसरे की सात बेटियां । सात बेटोंवाला व्यापारी हर प्रातः जब अपने घर के छज्जे पर आता तब सात बेटियोंवाले का इस प्रकार चिढ़ाते हुए अभिवादन करता ।

"नमस्कार, सात झाड़ुओंवाले व्यापारी जी ।"

दूसरे व्यापारी को यह खिजाना-चिढ़ाना बहुत बुरा लगता । वह झट अपना दरवाज़ा और खिड़की बन्द कर लेता । अन्दर आकर उसकी आंखों में क्रोध से आंसू आ जाते । उसकी पत्नी जब उसे इस हालत में देखती तो उसे बहुत दुःख होता । हर बार वह उससे पूछती कि क्या ऐसी बात थी जिससे उसे गुस्से में आकर रोना आता था । किन्तु उसका पति चुपचाप आंसू बहा देता ।

उसकी सबसे छोटी लड़की की आयु सत्रह वर्ष थी और वह अत्यन्त सुन्दर थी । उसका पिता भी उसे बहुत चाहता था । वह प्रतिदिन पिता की बुरी हालत देखती । एक दिन उसने हिम्मत करके पिता से पूछ ही लिया ।

"पिता जी, यदि आप मुझे बहुत चाहते हैं तो कृपा करके मुझे अपने दुःख का भागीदार समझिए, और बताइए कि ऐसी कौन-सी बात है जिसके कारण आपकी ऐसी दुर्दशा हो जाती है ?"

"मेरी बेटी, यह जो सामनेवाला व्यापारी है, वह हर प्रातः मुझे इस तरह से चिढ़ाता है— नमस्कार, सात झाड़ुओंवाले व्यापारी ।— तब मैं सुन्न रह जाता हूं और नहीं जानता कि उसे कौन-सा मुंहतोड़ जवाब दूं," पिता ने कहा ।

"बस इतनी-सी बात है, पिताजी ?" लड़की बोली । "ज़रा ध्यान से सुनिए । कल जब वह आपको इस प्रकार चिढ़ानेवाली बात कहे तो आप झट उत्तर दीजिए— नमस्कार सात तलवारोंवाले व्यापारी, आओ हम एक शर्त लगाएं । एक तरफ मेरी सबसे छोटी 'झाड़ू' और दूसरी तरफ़ तुम्हारी सबसे बड़ी 'तलवार', देखते हैं इन दोनों में कौन सबसे पहले पड़ोसी देश के राजा

का राजदण्ड और ताज लेकर यहां आता है । यदि मेरी बेटी (अर्थात झाड़ू) वे दोनों वस्तुएं ले आए तो तुम अपना सारा माल मुझे दे देना और यदि तुम्हारा बेटा (अर्थात तलवार) ले आए तो मैं अपना सारा माल तुम्हारे हवाले कर दूंगा । इस प्रकार, हे पिताजी, आप उसे कहिए और यदि वह यह शर्त मान जाए तो एक सरकारी कागज़ पर पक्की करार लिखकर उस पर अपने साथ उसके भी हस्ताक्षर ले लीजिए ।"

यह बात सुनकर पिता का मुंह खुला का खुला रह गया । जब लड़की चुप हुई, तब वह बोला ।

"मेरी बेटी, यह क्या कह रही है ? क्या तू चाहती है कि मेरा सारा माल खो जाए ?"

"नहीं पिताजी, डरिए मत, आप यह सब काम मुझ पर छोड़ दीजिए । आप बस यह शर्त जरूर लगाइए । शर्त पूरी करना मेरा उत्तरदायित्व रहा ।" बेटी ने आश्वासन दिया ।

उस रात पिता को नींद नहीं आ रही थी । वह बार-बार करवटें बदल रहा था और इस प्रतीक्षा में था कि कब दिन चढ़े और वह पड़ोसी व्यापारी को मुंहतोड़ जवाब दे ।

प्रातः होते ही वह अपने सामान्य समय से थोड़ा पहले ही छज्जे पर जा पहुंचा । सामनेवाले मकान की खिड़की अभी बन्द ही थी । थोड़ी देर बाद खिड़की खुली । सात लड़कोंवाले बाप ने स्वाभाविक ढंग से ताना कसा "नमस्कार, सात झाड़ुओंवाले व्यापारी ।"

"नमस्कार, सात तलवारोंवाले व्यापारी । आओ आज हम एक शर्त लगाएं । मैं अपनी सबसे छोटी 'झाड़ू' लेता हूं और तू अपनी सबसे बड़ी 'तलवार' । दोनों को हम एक घोड़ा और एक सोने की मोहरों की थैली देते हैं । फिर देखते हैं पड़ोस वाले राजा का कौन राजदण्ड और ताज लाता है । हम दोनों का माल-असबाब बाज़ी पर लगा । यदि मेरी बेटी जीत जाए तो मैं तुम्हारा सब कुछ ले लूंगा और यदि तुम्हारा बेटा जीत जाए तो तुम मेरा माल-जायदाद ले लेना ।" लड़कियों के पिता ने कहा ।

थोड़ी देर तक तो लड़कों के पिता का मुंह खुला का खुला रह गया । फिर ठहाका मारकर हंसा और हाथ से ऐसा इशारा कर रहा था जैसे वह पागल

हो गया हो ।

"मुझे ऐसे क्यों डरा रहा है । क्या तुझे मुझ पर भरोसा नहीं ?" लड़कियों का पिता बोला ।

"अरे जा, झाड़ूवाले, क्या तेरा सिर फिर गया है । मेरे सामने तू मुंह की खाएगा । चल, तू क्या याद रखेगा । अभी करार पर हस्ताक्षर करते हैं और अपने बच्चों को इस अभियान पर भेज देते हैं ।" तब वह अपने बड़े बेटे के पास गया और उसे सारी बात बताई । बड़े बेटे को जब यह पता चला कि वह एक सुन्दर कन्या के साथ सफ़र करेगा तो उसकी बाछें खिल गईं । उसने खुशी-खुशी अपने पिता को इस पर हस्ताक्षर करने का सुझाव दे दिया ।

करार पर हस्ताक्षर हो गए । किन्तु जब बड़ा बेटा विदा होने लगा तो वह यह देख कर दंग रह गया कि वह सुन्दरी, सैनिक पुरुष वेश में अपनी सफ़ेद घोड़ी पर सवार बड़ी गम्भीरता से अभियान के लिए तैयार थी । उसे लगा कि यह मज़ाक का मौका नहीं । वह अभी अपने मोटे तगड़े घोड़े पर सज-धज कर कठिनाई से उसकी लगाम पकड़ ही रहा था कि सुन्दर कन्या ने अपनी घोड़ी को एड़ लगाई और घोड़ी हवा से बातें करने लगी ।

पड़ोस के देश में जाने के लिए एक बहुत घने जंगल में से छोटी-सी पगडण्डी के रास्ते जाना पड़ता था । लड़की की घोड़ी ऐसी सधी-सियानी थी कि हर कांटेदार वृक्ष से अपनी मालकिन को बचाती हुई भयानक मोड़ों पर फूंक-फूंक कर कदम रखती थी, जबकि व्यापारी का लड़का अपने मोटे घोड़े को ठीक ढंग से चला भी नहीं पा रहा था । कभी उसका सिर किसी पेड़ से टकरा जाता और कभी काँटेदार झाड़ियों में फंसकर उलझ जाता । इस प्रकार युवक अभी जंगल में ही फंसा हुआ था कि लड़की ने उसे पार कर लिया । उसकी घोड़ी खुले मैदान में अब सरपट जा रही थी ।

मैदान के समाप्त होते ही पहाड़ी चढ़ाई शुरू हो जाती थी । पहाड़ी का मार्ग बहुत खतरनाक मोड़ों और गहरी खड्डों से भरा पड़ा था । जब लड़की अपनी घोड़ी पर एक ऊंची चोटी के पास थी तब उसने नीचे देखा कि युवक अभी पहाड़ी के शुरू में ही कठिनाई से पहुंचा था । फिर सब मोड़ों और खड्डों से बचते-बचाते दर्रा पार कर लड़की की घोड़ी मैदानी

भाग में आ पहुंची । मैदान में थोड़ा सांस लेकर घोड़ी ने फिर सरपट भागना शुरू कर दिया ।

लड़का अपने घोड़े को जोर-जोर से चाबुक लगाकर उसे पहाड़ी की ऊंचाई की तरफ ले जा रहा था । एक बार तो घोड़े ने तंग आकर उसे एक खड्ड में गिरा दिया । गिरते ही लड़के की टांग पर चोट आई । बड़ी मुश्किल से उठकर उसने घोड़े को पकड़ा और अपनी बीहड़ यात्रा जारी रखी ।

लड़की अब पड़ोसी देश की सीमा की ओर बढ़ रही थी । सीमा पार करने के लिए एक नदी से गुज़रना पड़ता था । घोड़ी सहित लड़की नदी में उतर गई । समझदार घोड़ी नदी में गहरे गड्ढों से बचने के लिए बड़ा संभल कर पांव रख रही थी । एक दो जगह उसने अपने को गड्ढ़ों में गिरने से बचा लिया । इस प्रकार घोड़ी लड़की को लेकर सही-सलामत नदी के दूसरे किनारे पर जा पहुंची ।

लड़की ने किनारे पर थोड़ा रुक कर आराम की सांस ली । पीछे मुड़कर देखा कि वह युवक भी अपने तगड़े घोड़े सहित नदी पार करने वाला था । उसने घोड़े को बेतहाशा पानी में धकेला । नदी के बीच एक गहरे गड्डे में घोड़े ने इस तेज़ी से पांव रखा कि वह अपने सवार सहित उसमें डूब गया । नदी की तेज़ धारा उन दोनों को बहाकर न जाने कहां ले गई ।

युवती अपनी वफ़ादार घोड़ी सहित पड़ोसी देश की राजधानी में पहुंच गई । एक युवक के वेश में उसने एक व्यापारी को अपना नाम तैम्पेरीनो बता कर परिचय दिया और उसके यहां व्यापार-सहायक के तौर पर नौकरी कर ली । यह व्यापारी शाही महल में अपना सामान भिजवाया करता था । तैम्पेरीनो उसे बहुत शिष्ट तथा सुन्दर लगता था । इसलिए एक दिन उसने राजमहल में रसद-सामान पहुंचाने के आदेशों के बारे में राजा से बातचीत करने के लिए इस योग्य युवक को भेज दिया । वहां का राजा युवक तथा अविवाहित था । राजकाज चलाने में वह गाहे-बगाहे अपनी अनुभवी माता का सहयोग लिया करता था ।

जैसे ही तैम्पेरीनो ने राजा को, व्यापारी के कारिन्दे के तौर पर अपना परिचय दिया, राजा उसका रूप यौवन देखकर दंग रह गया । राजा को उसके

बारे में सब कुछ जानने की उत्सुकता हुई ।

राजा बोला, "तुम कौन हो ? मुझे तो विदेशी लगते हो । इस राजा में कैसे पहुंचे हो ?"

"महाराज, मेरा नाम तैम्पेरीनो है ।" व्यापारी के कारिन्दे ने उत्तर दिया । "पहले मैं नेपल्ज़ के राजा का भण्डार-प्रबन्धक था । किन्तु दुर्घटनाओं का ऐसा चक्कर चला कि मुझे यहां तक पहुंचा दिया ।"

"यदि हम भण्डार-प्रबन्ध का कार्य तुम्हें सौंप दें तो कैसा रहे ? क्या तुम्हें पसन्द है ?" राजा ने पूछा ।

"महाराज, क्यों नहीं ! इस से बढ़कर मेरा सौभाग्य और क्या हो सकता है ?"

"ठीक है, मैं तुम्हारे मालिक से बात करूंगा ।" राजा बोला ।

भले ही व्यापारी इस होनहार 'युवक' को अपने कारिन्दे की सेवा से हटाना नहीं चाहता था किन्तु महाराज की इच्छा का पालन तो उसे करना ही था । अतः तैम्पेरीनो अब शाही भण्डार का प्रबन्धक नियुक्त हो गया । राजा जितने ध्यान से उस 'युवक' की रूप-सुन्दरता को देखता उतना ही वह उस पर आकर्षित होता । आखिर एक दिन उससे न रहा गया और उसने अपने मन का भेद अपनी माता से प्रकट कर दिया । "माताजी, इस तैम्पेरीनो में कोई ऐसी चीज़ है जो मुझे बरबस अपनी ओर खींचे लिए जा रही है ।" तब युवक राजा ने कुछ गाते हुए कहा—

कमर है उसकी पतली बल खाती
जब वह लिखती और है गाती
फूल से कोमल उसके हाथ
तैम्पेरीनो है मनमोहक सुन्दरी
दिल मेरा कहता यह बात ।

यह सुनकर राजमाता को बड़ी हैरानी हुई । उसने अपने बेटे से कहा—
"क्या तुम्हारा सिर फिर गया है, तैम्पेरीनो क्या लड़का नहीं है ?"

"नहीं माता जी, मुझे तो लड़की ही लगती है । इस तथ्य का कैसे पता लगाया जाए ?"

"इसका एक ढंग है," राजमाता ने कहा, "तुम उसके साथ शिकार खेलने

जाओ । यदि वह केवल बटेरों का अपनी बन्दूक से शिकार करे तो समझ लो कि लड़की है क्योंकि हम औरतों को भुना हुआ बटेर खाना अच्छा लगता है । और यदि वह सुनहरी तूती पक्षियों पर गोली चलाए तो समझ लो कि वह लड़का है क्योंकि आदमी लोग शौक के तौर पर ही तूती का शिकार करते हैं ।"

इस प्रकार राजा ने एक बन्दूक तैम्पेरीनो को दी और अपने साथ शिकार पर ले चला । किन्तु राजा के शाही घोड़े के बजाए तैम्पेरीनो अपनी वफ़ादार घोड़ी पर था जिसे वह सदा अपने साथ रखता था । राजा जान-बूझकर अपने साथ उस 'युवक' को बटेरों का शिकार करने के लिए उकसाता था, किन्तु जैसे ही कोई बटेर सामने दिखाई देता, घोड़ी तैम्पेरीनो को जबरदस्ती दूसरी ओर खींच कर ले जाती जिससे वह समझ गया कि घोड़ी नहीं चाहती कि वह बटेरों को निशाना बनाए ।

"महाराज," तैम्पेरीनो ने नम्रता से कहा, "यदि मेरी गुस्ताखी माफ़ हो तो एक बात कहूं ।"

"हां, तैम्पेरीनो, कहो-कहो, बिना झिझक के कहो ।" राजा बोला ।

"तो महाराज, बेचारे बटेरों को घेर कर निशाना बनाना क्या मरदानगी है ? आइए मेरे साथ, आप भी सुनहरी तूतियों का पीछा कीजिए जिन्हें अपनी गोली का निशाना बनाना बहुत कठिन है ।" युवक ने कहा ।

कुछ देर तूतियों का शिकार करने के बाद वे महल में लौट आए । महल में राजा ने फिर अपनी माता से अकेले में कहा—

"माता जी, वह तैम्पेरीनो तो बटेरों को छोड़ मुझे भी अपने साथ तूतियों का शिकार करने के लिए राज़ी कर रहा था । किन्तु—

कमर है उसकी पतली बल खाती
जब वह लिखती और है गाती
फूल से कोमल उसके हाथ
तैम्पेरीनो है मनमोहक सुन्दरी
दिल मेरा कहता यह बात ।

"मेरे बेटे, एक बार और प्रयत्न करो ।" राजमाता बोली, "इस बार तुम उसे शाही बागीचे और खेतों में ले जाओ । उसे कहना कि हमें सलाद खाना

अच्छा लगता है और हम स्वयं कुछ सब्ज़ियों को तोड़कर लाएंगे । यदि वह सब्ज़ियों के पौधों के ऊपर-ऊपर से पत्तों को बड़ी नज़ाकत के साथ तोड़े तो समझ लो कि लड़की है क्योंकि हम औरतों में इस तरह के काम करने का बहुत धैर्य है । और यदि वह जल्दी-जल्दी जड़ से ही सारा पौधा उखाड़ लाए तो समझना कि आदमी है ।"

अगले दिन राजा तैम्पेरीनो के साथ शाही बागीचे में पहुंचा । जब तैम्पेरीनो पौधों को नज़ाकत से ऊपर-ऊपर से तोड़ने लगा तो घोड़ी ने हिनहिनाना शुरू किया और अपने मुंह से पूरा पौधा उखाड़ कर दिखाया । 'युवक' भी समझ गया कि उसे भी वैसे ही करना है । और देखते ही देखते उसने टोकरी भर पौधे जड़ों सहित उखाड़ दिए ।

निराश होकर राजा फिर महल में लौटा । फिर माता को सारी बात बताई और मन के संशय को कविता में व्यक्त किया—

कमर है उसकी पतली बल खाती
जब वह लिखती और है गाती
फूल से कोमल उसके हाथ
तैम्पेरीनो है मनमोहक सुन्दरी
दिल मेरा कहता यह बात

"मेरे बेटे, अब तो बस एक ही चारा रह गया है कि तू उसे नहाने के लिए नदी पर ले जाए । जैसे ही तैम्पेरीनो कपड़े उतार कर नदी में उतरेगा, सब स्पष्ट हो जाएगा ।" राजमाता ने सुझाव दिया ।

अगले दिन प्रातः राजा ने 'युवक' को आदेश दिया—

"तैम्पेरीनो, आओ आज हम नदी पर चलेंगे । मेरा वहां नहाने को बहुत मन करता है और तुम भी मेरे साथ वहीं नहा लेना ।"

इस प्रकार राजा साधारण वेश में तैम्पेरीनो को साथ लेकर नदी पर पहुंच गया । वहां पहुंच कर तैम्पेरीनो ने कहा—

"महाराज ! पहले आप वस्त्र उतार कर नदी में स्नान शुरू करें, मैं भी थोड़ी देर में वहां आता हूं ।"

राजमाता ने झट राजदण्ड और ताज तैम्पेरीनो को दे दिया । वह अपनी घोड़ी पर सवार होकर नौ दो ग्यारह हो गई ।

"ठीक है, तुम भी जल्दी आ जाओ ।" यह कहकर राजा ने वस्त्र उतारे और नदी में उतर गया ।

इतने में घोड़ी हिनहिनाई और उसके मुंह से झाग बहने लगी । घोड़ी ने पीछे की ओर बेचैनी से भागना शुरू कर दिया ।

"मेरी घोड़ी, मेरी घोड़ी, क्या हो गया उसे ।" तैम्पेरीनो चिल्लाया । "महाराज, मेरी घोड़ी की तबियत खराब हो गई लगती है । मैं अभी उसे दिलासा देकर आया ।"

यह कहकर वह घोड़ी के पीछे भाग गया । पेड़ों की ओट में घोड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी । वह घोड़ी पर सवार हो शाही महल पुंचा । जाते ही वह राजमाता से बोला—

"राजमाता जी, नदी में स्नान करते हुए राजा को कुछ सैनिकों ने राजा मानने से इन्कार कर दिया है क्योंकि उन्होंने राजा को ऐसी हालत में कभी देखा ही नहीं । वे उसे बन्दी बनाना चाहते हैं । इसलिए राजा ने मुझे आपके पास भेजा है कि मैं शाही राजदण्ड और ताज लेकर वहां पहुंचूं और उन सैनिकों को उसके राजा होने का विश्वास दिलाऊं ।"

राजमाता ने झट राजदण्ड और ताज तैम्पेरीनो को दे दिया । वह अपनी घोड़ी पर सवार होकर नौ दो ग्यारह हो गई । नदी, पहाड़ और जंगल को पार करती हुई वह युवती चिन्ता में डूबे अपने पिता के पास लौट आई । बेटी को सही-सलामत, शाही डण्डे और ताज के साथ देख, पिता का दिल बाग़-बाग़ हो गया । वह शर्त जीत गया ।

सामनेवाले सात लड़कों के पिता का सारा घमण्ड और अकड़ चूर-चूर हो गये । न केवल उसने अपना सारा माल-असबाब ही खोया अपितु अपने सबसे बड़े बेटे की जान से भी हाथ धो बैठा । सच है कि किसी को बेकार चिढ़ाने और घमण्ड करने का फल ऐसा ही होता है ।

* * * * *

गेहूं के तीन दाने

पिऊमादोरो एक अनाथ लड़की थी । केवल उसका एक दादा था जिसके साथ वह वनस्थली में एक झोंपड़ी में रहती थी । दादा लकड़ियों से कोयला बनाने का काम करता था और पिऊमा उसकी लकड़ियां इकट्ठी करने के काम में सहायता करती थी । वह लड़की जैसे-जैसे बड़ी होती जाती उसकी सुन्दरता में चार चांद लगते जाते । उसकी सखियां भी उसे बहुत प्यार करतीं । बड़ी-बूढ़ी स्त्रियां भी उसे बहुत चाहतीं ।

एक दिन उसने देखा कि वसन्त ऋतु में फूल खिले हुए थे । एक सफ़ेद रंग की तितली फूलों पर घूमती-घूमती उसकी खिड़की के पास आकर बैठ गई । पिऊमा यह सब दृश्य खिड़की के पास बैठी देख रही थी । उसने झट तितली को अपनी उंगलियों में पकड़ लिया ।

"कृपा करके मुझे जाने दो !" बारीक आवाज में तितली बोली ।

पिऊमा ने उसे छोड़ दिया ।

"धन्यवाद, सुन्दर कन्या, तुम्हारा नाम क्या है ?" तितली ने पूछा ।

"पिऊमादोरो।"

"मेरा नाम श्वेतिका है ।" तितली बोली, "मैं अपनी सुंडियों को दूर एक स्थान पर ले जा रही हूं । एक दिन तुम्हारे एहसान का बदला जरूर चुकाऊंगी ।" फिर तितली उड़ गई ।

एक और दिन पिऊमा पेड़ों के बीच खेल रही थी कि उसने एक चमकते हुए जुगनू को अपने हाथ में पकड़ लिया ।

"भगवान के लिए मुझे छोड़ दो, बड़ी कृपा होगी ।" जुगनू बोला ।

पिऊमा ने उसे भी छोड़ दिया ।

'धन्यवाद, सुन्दर कन्या, तुम्हारा नाम क्या है ?" जुगनू ने पूछा ।

"पिऊमादोरो ।"

"धन्यवाद पिऊमा, मैं बड़ी दूर अपने अण्डे जमा करने जा रहा हूं । एक दिन तुम्हारे एहसान का बदला ज़रूर चुकाऊंगा ।" यह कहकर जुगनू उड़ गया ।

एक और दिन पिऊमा ने गुलाब के फूल पर बैठे एक भंवरे को पकड़ लिया ।

"मुझे जाने दो, बड़ी कृपा होगी ।"

पिऊमा ने उसे भी छोड़ दिया ।

"धन्यवाद, सुन्दर कया, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"पिऊमादोरो ।"

धन्यवाद पिऊमा ! "मेरा नाम सुनहरी भंवरा है । मैं दूर-दूर तक गुलाब के फूल ढूंढ़ने जा रहा हूं । एक दिन तुम्हारे एहसान का बदला जरूर चुकाऊंगा ।" यह कहकर भंवरा उड़ गया ।

पिऊमादोरो चौदह वर्ष की हो गई । किन्तु उसके साथ एक विचित्र घटना घटने लगी । प्रतिदिन उसका भार कम होने लगा । भले ही उसके सुनहरी बालों और खिले चेहरे से उसका यौवन निखर रहा था ।

प्रारम्भ में तो उसने इस भार घटने के तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया । वह प्रकृति की गोद में हंसती-खेलती रहती । कभी वह ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर चढ़ जाती और फिर ऐसे धीरे-धीरे नीचे उतरती जैसे एक कागज़ का टुकड़ा हो । वह सदा गाया करती—

> नहीं मेरी कोई और अभिलाषा
> ओ पिऊमादोरो, भली सुन्दर कन्या
> रहे मेरी यह अमर कहानी
> बनूं मैं एक दिन अच्छी रानी ।

जैसे-जैसे समय बीतता गया वह और हलकी होती गई । एक दिन वह इतनी हलकी-फुलकी हो गई कि उसके दादा ने उसके घाघरे के साथ एक छोटा पत्थर का टुकड़ा बाँध दिया । दादा को डर था कि कहीं हवा का तेज़ झोंका उसे उड़ाकर न ले जाए । जब वह और हलकी हो गई तो दादा ने उसे प्रायः अपने घर के कमरे में बन्द करके रखना शुरू कर दिया । बूढ़े दादा को चिन्ता सता रही थी । वह बड़े प्यार से कहता—

"पिऊमा, मेरी प्यारी बेचारी पिऊमा, ऐसा लगता है कि यह किसी जादू-टोने का चक्कर है ।"

बूढ़ा ठण्डी आहें भरता और गहरी सोच में डूब जाता ।

एक दिन प्रातः जब पिऊमा सो कर उठी तो उसे लगा कि वह और भी हलकी हो गई थी ।

"मेरी तरफ फूंक मारो, दादा जी ।" पिऊमा बोली ।

किन्तु दादा का कोई जवाब नहीं ।

"मुझे फूंक मार कर देखो दादा जी, मैं कितनी हलकी हो गई हूं ।"

जब दादा ने फिर भी जवाब न दिया तो पिऊमा को चिन्ता हुई । वह उसके बिस्तर पर गई । दादा को ज़ोर-ज़ोर से पुकारा । हाथ लगाने पर पिऊमा ने देखा कि दादा के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे । पिऊमा फूट-फूट कर रोने लगी । वह तीन दिन और तीन रातें रोती रही ।

चौथे दिन प्रातः जैसे ही वह कुछ लोगों को बुलाने के लिए घर से बाहर निकली ही थी कि हवा का एक तेज़ झोंका आया और उसे उड़ा ले चला । हवा उसे ऊपर ही ऊपर उड़ाए लिए जा रही थी जैसे कोई साबुन का बुलबुला हो । उसने एक जोर की चीख मारी फिर अपनी आंखें बन्द कर लीं । जब भी ज़रा आंखें खोलती वह देखती कि उसके नीचे हरे-हरे खेत, श्वेत चमकती नदियां, घने-घने जंगल और नगरों में गिरजाघरों की चोटियां सब गुज़र रहे थे ।

डर के मारे उसने फिर आंखें बन्द कर लीं । उसका सिर चकराने लगा । तभी उसने हलकी-हलकी आवाजें सुनी—

"हिम्मत करो, पिऊमा !"

पिऊमा ने आंखें खोलीं । देखा कि एक तितली, एक जुगनू और एक सुनहरी भंवरा तीनों ही थे । तीनों पिऊमा को ढाढ़स बंधा रहे थे—

"हवा हमें भी तुम्हारे साथ लिए जा रही है, भली पिऊमा । हम तुम्हारे साथ रहेंगे और तुम्हारा भाग्य बनाने में सहायता करेंगे ।"

पिऊमा को लगा जैसे वह फिर से जीवित हो गई हो ।

"धन्यवाद मेरे प्यारे मित्रो ।" मस्त होकर वे तीनों गाने लगे—

नहीं तेरी कोई और अभिलाषा
ओ पिऊमादोरो, भली सुन्दर कन्या
रहे यह तेरी अमर कहानी
बने तू एक दिन अच्छी रानी ।

"कौन है जो मेरे कानों में यह मधुर गीत बड़ी देर से गा रहा है ?" पिऊमा बोली ।

"तुम्हें शाम को सब पता चल जाएगा, जब हम किशोरावस्था की परी के पास पहुंचेंगे ।"

और इस तरह पिऊमादोरो, तितली, जुगनू और भंवरा चारों अपनी यात्रा पर हवा के ज़ोरदार झोंके से बढ़े जा रहे थे ।

सायं को वे सभी किशोरावस्था की परी के पास पहुंच गए । उसकी खुली खिड़की से अन्दर घुस गए । सौम्य परी ने उनका हार्दिक स्वागत किया । परी अपने भवन के बड़े-बड़े कक्षों से गुज़रती हुई पिऊमा को हाथ से पकड़ कर उसे एक सोने की तिजोरी के पास ले आई । तिजोरी खोल कर परी ने एक गोलाकार शीशा निकाला ।

"ज़रा इसके अन्दर झांक कर देखो ।" परी ने कहा ।

पिऊमा ने शीशे में देखा । उसे एक सुन्दर सुहावने बाग़ का दृश्य दिखाई दिया । उसमें तरह-तरह के रमणीय वृक्ष तथा फल-फूल लगे थे । पिऊमा ने ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था । उस उद्यान में एक सुन्दर छबीला युवक था । शाही वस्त्र पहने वह एक सोने के रथ पर बैठा था जिसे पांच सौ बैलों के जोड़े बड़ा ज़ोर लगाकर खींच रहे थे । वह युवक राजकुमार था और गा रहा था—

ओ पिऊमादोरो मेरी प्यारी
सुन्दर छबीली सुकुमारी
तू बनेगी एक दिन मेरी रानी ।

"वह जो तुम देख रही हो, वह 'भाग्यशाली द्वीप' का राजकुमार है । वह तुम्हें अपने गीत से बहुत देर से बुला रहा है । वह एक जादू का शिकार है जिसका प्रभाव तुम्हारे ऊपर उलटा होता है । यही कारण है कि पांच सौ बैलों के जोड़े उसे बड़ी कठिनाई से खींच पा रहे हैं । उसका भार बढ़ता ही जाता है । इस जादू-टोने का प्रभाव तब समाप्त होगा जब तुम उसके गालों पर हाथ लगाओ गी ।" परी ने पिऊमा से शीशा वापस लेते हुए कहा ।

फिर परी ने उसे गेहूं के तीन दाने देते हुए कहा—

"अब तुम यहां से 'भाग्यशाली द्वीप' के लिए विदा हो जाओ । वहां पर

पहुंचने से पहले हवा तुम्हें तीन दुर्गों के ऊपर से ले गुज़रेगी । हर दुर्ग के ऊपर तुम्हें एक दुष्टात्मा या चुड़ैल मिलेगी जो तुम्हें डरा-धमका कर या लल्लोचप्पी से फुसला कर अपनी ओर खीचेंगी ताकि तुम अपने मार्ग से भटक जाओ और अपने लक्ष्य तक न पहुंच सको । तब तुम्हें हर बार एक दाने को उस पर फेंक देना होगा ।"

पिऊमा ने परी का धन्यवाद किया । खिड़की से बाहर निकल कर अपने साथियों सहित वह हवा के झोंके के साथ आगे उड़ चली ।

सायं को वे पहले किले के ऊपर पहुंचे । किले की मीनार के ऊपर उन्हें भांति-भांति के रंगोंवाली युवती दिखाई दी जो उन्हें अपने हाथों के इशारे से अपनी ओर बुला रही थी । पिऊमा को लगा कि एक रहस्यमय शक्ति उसे उस युवती की तरफ खींच रही थी । वह धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी । उसे लगा कि नीचे किले के अन्दर उद्यान में उसे कई जाने-पहचाने चेहरे दिखाई दे रहे थे । वे सब पिऊमा को देखकर खुशी से हंस रहे थे । उनमें कई उसके अपने गांव के लोग थे । और तो और उसे अपना दादा भी दिखाई दिया जो उसका अभिवादन कर रहा था ।

किन्तु उसी क्षण भंवरे ने उसे 'किशोरावस्था की परी' की चेतावनी याद दिलाई । पिऊमा ने गेहूं का एक दाना नीचे फेंक दिया । दाने के नीचे गिरते ही सभी हंसमुख व्यक्ति राक्षसों में परिवर्तित हो गए । पिऊमा फिर से ऊपर उठने लगी । अपने साथियों सहित वह फिर ऊपर उड़ने लगी । वह समझ गई कि वह दुर्ग झूठ-कपट का अड्डा था । और वह दाना जो उसने फेंका था वह विवेकशीलता का प्रतीक था ।

वे और आगे उड़ते गए । अब उन्हें दूसरा दुर्ग दिखाई दिया । उस किले की मीनार पर हरे रंग की स्त्री बड़ी क्रोधोन्मत्त थी । किले का रंग भी खून जैसा लाल था । किले की दीवार और दालान पर भी लोगों के समूह उन्हें क्रूर रूप से डराने-धमकाने के चिह्न दिखा रहे थे ।

पिऊमा फिर एक अद्भुत शक्ति के दबाव में नीचे उतरने लगी । भयभीत हुई उसने दूसरा दाना भी नीचे फेंक दिया । जैसे ही उस दाने ने भूमि को छुआ, वह दुर्ग सोने के रंग का बन गया । वह डरावनी स्त्री तथा बाकी लोग हंसते-मुसकराते दीखने लगे । अब वे सब पिऊमा को दोनों हाथों से

फिर परी ने पिऊमा को गेहूं के तीन दाने देते हुए कहा, "अब तुम यहां से भाग्यशाली द्वीप के लिए विदा हो जाओ ।"

नमस्कार कर रहे थे । पिऊमा अपने साथियों सहित फिर ऊपर उठने लगी । हवा का वेग उसे और आगे ले चला । पिऊमा समझ गई कि वह दाना समृद्धि तथा भलाई को लाने वाला था ।

और आगे उड़ते-उड़ते वे अब तीसरे किले के ऊपर जा पहुंचे वह बहुत आकर्षक किला था, जो सोने और कीमती पत्थरों से बना था । उसकी मीनार पर नीले रंग की औरत बैठी थी । पिऊमा फिर एक अदृश्य शक्ति से उसकी ओर खिंची चली जा रही थी । जैसे-जैसे वह किले के पास पहुंच रही थी, वहां पर हंसी-मज़ाक के ठहाके, संगीत-नृत्य की झंकार और तरह-तरह की रंगरलियों का शोर सुनाई दे रहा था । बड़े-बड़े बाग-बगीचों में लोग नाच रहे थे, तमाशे कर रहे थे और नाटक देख रहे थे ।

पिऊमा उस विचित्र चकाचौंध से प्रभावित होकर उनके बीच नीचे उतरने ही वाली थी कि भंवरे ने उसे फिर 'किशोरावस्था की परी' की चेतावनी याद दिलाई । पिऊमा ने भारी हृदय के साथ तीसरा दाना भी नीचे फेंक दिया । उसके भूमि को छूते ही वह किला भयानक गुफ़ाओं में बदल गया । नीले रंगवाली युवती एक भयानक बूढ़ी जादूगरनी बन गई । सम्पन्न स्त्री-पुरुष फटे-पुराने कपड़ों में रोते-बिलखते पत्थरों से ठोकरें खाते दिखाई दे रहे थे । पिऊमा हवा के झोंके से फिर ऊपर उठने लगी । वह समझ गई कि वह किला इच्छाओं का गढ़ था और फेंका गया तीसरा दाना बुद्धिमत्ता का द्योतक था ।

वह और आगे बढ़ रही थी । इस बीच तितली, जुगनू और भंवरा उसके साथ उड़ते-उड़ते अपने जैसे और साथियों को भी बुला-बुलाकर अपने संग लिये जा रहे थे । इस प्रकार पिऊमा के पीछे तरह-तरह के रंगों की तितलियों, जुगनुओं तथा भंवरों का एक लम्बा-चौड़ा जुलूस उड़ा जा रहा था । उड़ते-उड़ते पिऊमा ने नीचे देखा । दूर-दूर तक नीला समुद्र फैला हुआ था । जब कहीं पिऊमा को नीचे गिरने का डर होता, दस हज़ार तितलियां तथा जुगनू उसको अपने छोटे-छोटे परों का सहारा देते । इस प्रकार वह सात दिन यात्रा करते रहे । आठवें दिन प्रातः 'भाग्यशाली द्वीप' की सोने की मीनारें तथा ऊंचे-ऊंचे चीड़ के पेड़ दिखाई दिए ।

'भाग्यशाली द्वीप' राज्य में सब ओर उदासी छायी हुई थी । राजकुमार

जिसका नाम पिओम्बोफ़ीनो था अपने भार से महल के अन्दर विशाल सभाकक्ष में फ़र्श के नीचे धंसा जा रहा था । सुनहरी बाल, नीली आंखें, लाल रंग की मखमली पोशाक में देव समान सुन्दर युवराज दुर्भाग्य से जादू का शिकार हो कर दुर्दशा में पड़ा था ।राजा ने कई ज्योतिषियों, वैद्यों, ओझाओं, इत्यादि को बुला-बुला कर उसका उपचार करने का प्रयत्न किया किन्तु सब व्यर्थ । युवराज के मुख पर बस एक ही धुन सवार थी । वह एक ही गीत गाता था—

"ओ पिऊमादोरो मेरी प्यारी
सुन्दर छबीली सुकुमारी
तू बनेगी एक दिन मेरी रानी"

राजकुमार धीरे-धीरे और नीचे धंसा जा रहा था जैसे कांसे का पुतला समुद्र की रेत में धंस रहा हो । एक ज्योतिषी ने राजा को बताया कि जब आकाश में शुभ तारों का मेल होगा तब इस युवक का दुर्भाग्य बदलेगा । राजा ने राज-ज्योतिषी सिमोने को मीनार पर बैठवा दिया ताकि वह आकाश की गतिविधि देखता रहे । रानी कई बार खिड़की खोल कर उस ज्योतिषी से बेचैनी से विवरण पूछती रहती—

"ज्योतिषी सिमोने, क्षितिज पर क्या दिखाई दे रहा है ?"

"महारानी जी, सारस पक्षियों का एक झुण्ड उड़ा जा रहा है ।" उसने उत्तर दिया ।

थोड़ी देर बाद रानी ने फिर आकर पूछा ।

"अब क्या दिखाई दे रहा है ?"

"अभी तो कुछ नहीं है, महारानी जी ।"

थोड़ी देर बाद ज्योतिषी चिल्लाया—

"महाराज आइए, आकाश पर एक सुन्दर चमकता तारा आ रहा है ।"

सभी अपना-अपना काम छोड़ कर महल की खिड़कियों की ओर भागे । सभा-कक्ष की खुली खिड़की से पिऊमा अपने दल-बल के साथ वहां प्रवेश कर गई । दस हजार सुनहरी भंवरे अब हरे रंग के वस्त्रों में बदल कर दस हजार परिचर बच्चे बन गए । वे पिऊमा को इस प्रकार कक्ष में प्रवेश करा रहे थे जैसे वह सचमुच दैवी राजसी कन्या हो ।

अन्दर आते ही पिऊमा ने युवराज के गालों को छुआ । जादू-टोने का सम्मोहन टूट गया । छलांग लगाकर वह फर्श से बाहर आ गया जैसे वह किसी स्वप्नलोक से आया हो । सब ओर खुशी की लहर दौड़ गई । राजकुमार ने पिऊमा का आलिंगन कर धन्यवाद किया । राजा ने दीपमाला की घोषणा की । सायं को आतिशबाज़ी की गई ।

आठ दिन बाद शुभ मुहूर्त निकला । राजसी धूमधाम के साथ कोयला बनानेवाली भली पिऊमादोरो का 'भाग्यशाली द्वीप' के उत्तराधिकारी राजकुमार पिओम्बोफ़ीनो के साथ विवाह हो गया । राजकुमार खुशी से गा रहा था—

"ओ पिऊमादोरो मेरी प्यारी
सुन्दर छबीली सुकुमारी
तू बन गई है अब मेरी रानी"

* * * * *

ज्ञान का चमत्कार

एक समय की बात है कि एक धनी व्यापारी का एक पुत्र था । उस पुत्र का नाम बोबो था । वह अत्यन्त ही मेधावी तथा बुद्धिमान था तथा उसे सब कुछ सीखने की उत्कट इच्छा थी । उसके पिता ने उसे अत्यन्त विद्वान प्राध्यापक के सुपुर्द किया ताकि उसका बेटा सभी भाषाएं सीख सके ।

बोबो की पढ़ाई समाप्त हो गई और वह अपने घर लौट आया । एक सायं वह अपने पिता के साथ बाग़ में भ्रमण कर रहा था । एक पेड़ पर चिड़िया शोर कर रही थीं । एकदम बड़े ज़ोर की चहचहाट थी । "ये चिड़िया तो हर सायं मेरे कानों के परदे फाड़ने वाला शोर करती हैं," उस व्यापारी ने अपने कानों में उंगलियां देते हुए कहा ।

तब बोबो ने कहा, "क्या आप जानना चाहेंगे कि ये चिड़िया आपस में क्या बातचीत कर रही हैं ?"

पिता ने हैरान होकर उसे देखते हुए कहा, "तू कैसे जानता है कि ये चिड़िया क्या कह रही हैं ? क्या तू कोई ज्योतिषी है ?"

"नहीं किन्तु मेरे गुरु ने मुझे सभी जानवरों की बोलियां सिखाई हैं," पुत्र ने उत्तर दिया ।

"ओह, तब तो तू ने मेरे पैसों को अच्छी तरह खर्च डाला है ।" पिता ने कहा, "पता नहीं उस गुरु ने क्या समझ लिया ? मैं तो यह चाहता था कि वह तुझे वे भाषाएं सिखाए जो आदमी बोलते हैं, वे नहीं जिन में जानवर आपस में चैं-मैं करते हैं ।"

"किन्तु पशुओं की बोलियां कहीं अधिक कठिन हैं और मेरे गुरु ने उनसे ही मेरी पढ़ाई शुरू करनी चाही ।"

इतने में एक कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकता हुआ उनकी तरफ़ भागा आ रहा था । तब बोबो ने कहा, "क्या मैं आप को बताऊं कि यह क्या कह रहा है ?"

"नहीं ! तू मुझे इन जानवरों की बोलियों से तंग मत कर । बेकार में मैंने इतने पैसे तुझ पर बरबाद कर दिये हैं ।"

तब वे एक खाई के पास से गुज़र रहे थे और कुछ मेंढक अपना राग अलाप रहे थे ।

"ये मेंढक भी मुझे थोड़ा चैन से नहीं जीने देते ।" पिता ने बड़बड़ाते हुए कहा ।

"पिता जी, आप जानना चाहेंगे कि ये मेंढक · · · " बोबो ने कहना शुरू किया ।

"तू जा भाड़ में और वह भी जिसने तुझे ऐसी शिक्षा दी है ।" पिता ने गुस्से से कहा । उसके पिता को इस बात का बहुत दुःख हुआ कि उसने व्यर्थ में ही अपने पुत्र की शिक्षा पर रुपया-पैसा बरबाद किया । उसे ऐसा महसूस होने लगा कि ये पशुओं की बोलियां उसे दुर्भाग्य की ओर ले जाएंगी । इसलिए उसने अपने दो नौकरों को बुलाया और उन्हें कुछ आदेश दिया जो उन्हें अगले दिन पूरा करना था ।

अगले दिन प्रातः बोबो को नींद से उठाया गया । एक नौकर ने उसे घोड़ागाड़ी में बैठाया और स्वयं उसके पास बैठ गया । दूसरे नौकर ने घोड़ों को चाबुक मारा और देखते ही देखते दोनों घोड़े गाड़ी लेकर सरपट भागने लगे । बोबो को अपने सफर के बारे में कुछ पता नहीं था । किन्तु वह देख रहा था कि उसके पास बैठे हुए नौकर की सूजी आंखों में उदासी थी ।

"हम कहां जा रहे हैं ?" बोबो ने उसे पूछा । "तुम क्यों इस तरह से उदास हो ?" किन्तु नौकर चुप्पी साधे बैठा था ।

तभी घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू कर दिया और बोबो समझ गया कि वे क्या कह रहे थे । "हमारा सफ़र बड़ा दुःखभरा है । हम अपने मालिक को मौत के पास ले जा रहे हैं ।" एक घोड़े ने कहा । तब दूसरे घोड़े ने उत्तर दिया, "इसके पिता का आदेश बहुत निर्दयतापूर्ण है ।"

"हां, तो तुम्हें मेरे पिता ने मेरी हत्या करने के लिए भेजा है ?" बोबो ने दोनों नौकरों से पूछा ।

नौकरों ने बड़ी हैरानी से पूछा, "आप को कैसे पता चल गया ?"

"मुझे इन घोड़ों ने बताया है ।" बोबो ने कहा । "अतः शीघ्र ही मेरी हत्या क्यों नहीं कर देते । मुझे क्यों और इंतज़ार करा कर मौत के घाट उतारोगे ?"

"नहीं, हमारा दिल ऐसा करना नहीं चाहता ।" नौकरों ने कहा, "हम ऐसा कोई उपाय सोच रहे हैं जिससे आपकी जान भी बनी रहे और मालिक हम पर भी नाराज़ न हो ।"

तब एक कुत्ता भौंकता हुआ वहां आ पहुंचा जो उनकी घोड़ागाड़ी के पीछे भागता आ रहा था । बोबो झट समझ गया कि वह क्या कह रहा था । "अपने मालिक को बचाने के लिए मैं अपना जीवन भी दे दूंगा ।"

"यदि मेरा पिता निर्दयी है · · · " बोबो ने कहा, "तो ऐसे वफ़ादार प्राणी भी हैं, जैसे तुम मेरे प्यारे नौकर और यह कुत्ता जो तैयार है अपना जीवन मेरे लिए देने के लिये ।" बोबो ने उन्हें बताया ।

"तब," नौकरों ने कहा, "हम इस कुत्ते की हत्या करके इसका दिल प्रमाण के तौर पर आपके पिता को दिखाने के लिए ले जायेंगे । आप, हे हमारे मालिक, यहां से भाग जाइये । बाकी हम देख लेंगे ।"

बोबो ने तब अपने वफ़ादार नौकरों तथा कुत्ते को गले लगाया और सब प्रकार की स्थितियों का सामना करने के लिए वहां से चला गया । वह चलता ही गया । रात्रि होते ही वह एक गांव के बाहर झोंपड़ों के पास पहुंचा । उसने देखा कि कुछ किसान वहां पर भोजन करनेवाले थे । उसने उनसे रात्रि गुज़ारने तथा खाना खाने की इच्छा प्रकट की । किसानों ने उसका स्वागत किया । जैसे ही एक साथ भोजन करने के लिए वे सब लोग मेज़ के पास बैठे हुए थे कि एक कुत्ते ने चीख़ भरी आवाज़ें निकालना शुरू कर दिया । बोबो ने खड़े होकर थोड़ी देर बहुत ध्यान से उसकी आवाज़ों को सुना । तब उसने किसानों को कहा, "जल्दी कीजिए । औरतों और बच्चों को जल्दी घरों के अन्दर रहने का प्रबन्ध कीजिए । आप सब पुरुष लोग अपने-अपने हथियार लेकर पहरे पर खड़े हो जाइए । आधी रात के आस-पास डाकुओं का एक झुण्ड आप पर हमला करने आ रहा है ।"

किसानों ने सोचा कि उसका सिर फिर गया है ।

"किन्तु आप कैसे जानते हैं ? आपको किसने ऐसा कहा है ?"

"यह मैंने इस कुत्ते से जाना है जो आपको चेतावनी देने के लिए बड़ी देर से भौंक रहा है । बेचारा कुत्ता! यदि मैं न होता तो इसका भौंकना-चिल्लाना सब व्यर्थ जाता । यदि आप मेरी बात मानेंगे तो

सही-सलामत बच निकलेंगे । अन्यथा वे लोग आपका सब कुछ लूट ले जाएंगे ।"

तब किसानों ने अपनी औरतों तथा बच्चों को घरों के अन्दर बन्द कर दिया । वे स्वयं अपनी बन्दूकें लेकर झाड़ियों के पीछे छुप गए । आधी रात को, पहले एक सीटी की आवाज आई, फिर दूसरी सीटी की । कुछ लोगों की हलचल हुई । जैसे ही फिर डाकुओं ने उनके घरों की तरफ़ बढ़ना शुरू किया कि किसानों ने अपनी बन्दूकें दाग दीं । डाकू दुम दबाकर भाग निकले । दो डाकू जल्दी में दलदल में फंसने के कारण पकड़ लिए गए ।

अगले दिन बोबो के आदर-सम्मान में उत्सव मनाया गया । वहां के सभी किसान यह चाहते थे कि वह उनके बीच ही सदा रहे । किन्तु बोबो यह सब कुछ नहीं चाहता था । और वह आगे बढ़ गया ।

वह चलता गया । चलता ही गया । अगली सायं को वह दूसरे किसानों के घरों के बाहर जा पहुंचा । वह एक घर के दरवाज़े को खटखटाने की सोच ही रहा था, कि उसे पास की नाली के अन्दर मेंढकों के टर्राने की आवाज आई । वह उन्हें सुनने के लिए खड़ा हो गया ।

"अरे, मेरी ओर फेंक दे यह छोटी-सी रोटी ।" एक मेंढक टर्राया । "नहीं मुझे दो, मुझे", दूसरे ने कहा । यदि मेरी ओर नहीं फेंकोगे तो मैं नहीं खेलूंगा," तीसरे ने कहा । "तुम मत पकड़ो, कहीं यह टूट न जाए । इसे हमने कई सालों से संभाल कर रखा है!"

बोबो उनके पास गया तो देखा कि वे पवित्र रोटिका के साथ गेंद की तरह खेल रहे थे ।

"छः साल हो गए कि यह हमारे पास यहां नाली में है ।" एक मेंढक ने कहा । "बहुत पहले इस घर के किसान की बेटी को शैतान ने गलत रास्ते पर डाल दिया था । तब इसकी लड़की ने गिरजाघर में प्रभु के प्रसाद के रूप में उसे खाने की बजाए जेब में छिपा लिया था । गिरजे से लौटते समय इसे नाली में फेंक दिया था ।" यह सब सुनकर बोबो ने उस किसान के घर का दरवाजा खटखटा दिया । किसान ने उसे प्रेमभाव से अन्दर बुलाया । भोजन करते समय बोबो ने उस किसान से यह पता कर लिया कि उसकी एक बेटी है जो छः वर्ष से रोगी चली आ रही थी । किसी डाक्टर को यह

पता नहीं चल सका था कि वह क्यों बीमार रहती थी । और अब तो वह इतनी कमज़ोर हो गई थी कि मृत्यु के पास पहुंचने वाली लगती थी ।

"निस्सन्देह," बोबो ने कहा, "इस बेटी को सचमुच भगवान सज़ा दे रहा है । छः वर्ष पहले इसने पवित्र रोटिका को नाली में फेंक दिया था । अब इस रोटिका को ढूंढ़ कर वह इसे श्रद्धापूर्वक प्रभु प्रसाद के रूप में ग्रहण करे । तब यह बिलकुल ठीक हो जाएगी ।"

किसान को यह सब सुनकर बड़ी हैरानी हुई, "किन्तु आपको यह सब कैसे मालूम हुआ है ?"

"मेंढकों से ।" बोबो ने कहा ।

किसान ने इसे बहुत अच्छी तरह न समझते हुए भी नाली में उस रोटिका की तलाश की । उसे रोटिका मिल गई । बेटी ने उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण किया और शीघ्र ही वह चंगी भली हो गई । किसान नहीं जानता था कि बोबो को किस प्रकार का मुआवज़ा दिया जाए । किन्तु बोबो ने उससे कोई रुपया-पैसा या मुआवज़ा लेने से इनकार कर दिया । वह फिर आगे चल दिया ।

एक दिन बला की गर्मी पड़ रही थी । उसने देखा दो आदमी एक पेड़ की छाया में विश्राम कर रहे थे । वह भी उनके पास लेट गया । वह उनसे बात करने लगा । बोबो ने उनसे पूछा, "आप दोनों कहां जा रहे हैं ?"

"हम रोम शहर जा रहे हैं । आपको पता नहीं कि पिछले ईसाई सन्त पिता, पोप का देहान्त हो गया है ? अब नया पोप चुना जाएगा," उन्होंने कहा । इतने में उस पेड़ की शाखों पर कुछ चिड़िया आकर बैठ गईं ।

"ये चिड़िया भी तो रोम शहर जा रही हैं ।" बोबो ने कहा ।

"आप कैसे जानते हैं ?" उन दोनों ने पूछा ।

"क्योंकि मैं इनकी बोली समझता हूं," बोबो ने बताया । फिर थोड़ी देर कान लगा कर उसने चिड़ियों की चैं-चैं को सुना ।

"आप जानते हैं ये क्या कह रही हैं ?"

"क्या कह रही हैं ?"

"ये कह रही हैं कि हम तीनों में कोई एक पोप चुना जाएगा ।"

कबूतरी को कुछ देर बाद सबके ऊपर उड़ने के लिए छोड़ दिया गया । कबूतरी उड़ती रही, उड़ती रही, और अन्त में थक कर बोबो के सिर पर आकर बैठ गई ।

उन दिनों रोम में ऐसा होता था कि ईसाई धर्म के अध्यक्ष पोप को चुनने के लिए सेंट पीटर के चौक में इकट्ठी भीड़ के ऊपर एक कबूतरी को उड़ने के लिए छोड़ दिया जाता था । जिस व्यक्ति के सिर पर जाकर वह कबूतरी बैठ जाती थी, वह पोप चुन लिया जाता था । वे दोनों व्यक्ति बोबो के साथ उस पेड़ के नीचे से उठकर रोम के सेंट पीटर चौक में आ पहुंचे । बहुत बड़ी भीड़ के बीच वे भी शामिल हो गए ।

कबूतरी को कुछ देर बाद सबके ऊपर उड़ने के लिए छोड़ दिया गया । कबूतरी उड़ती रही, उड़ती रही, और अन्त में थक कर बोबो के सिर पर आकर बैठ गई । सब ओर खुशी के गीत और जय-जयकार हो उठी । बोबो को कीमती वस्त्रों से सुसज्जित कर एक सुन्दर सिंहासन पर बैठाया गया ।

वह समस्त जनता को अपना आशीर्वाद देने के लिए खड़ा हुआ । यकायक चौक में सब ओर छाये हुए सन्नाटे में एक चीख सुनाई दी । एक बूढ़ा व्यक्ति मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा था । नया पोप बोबो, उस आदमी को बचाने के लिए उसकी ओर दौड़ा । तब उसने पहचाना कि वह उसका अपना पिता ही था जिसे अपने बुरे बर्ताव के कारण अपने बेटे को इतने ऊंचे पद पर देखकर ग्लानि हो रही थी । जैसे ही बेटे ने उसे अपने बाज़ूओं का सहारा दिया पिता ने आंखें खोलीं । फिर अपने बेटे से अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगी । और थोड़े क्षणों के बाद उसके प्राण-पखेरू उड़ गए ।

बोबो ने अपने पिता को क्षमा कर दिया । वह कैथोलिक ईसाइयों के बहुत अच्छे पोपों में एक गिना जाता है ।

* * * * *

स्वर्ग की यात्रा

एक बार की बात है कि दो अत्यन्त घनिष्ठ मित्र थे । उन दोनों ने आपस में एक पक्का वायदा किया कि जब उनमें से कोई पहले शादी करेगा तो दूसरा उसके विवाह के अवसर पर धर्म पिता के तौर पर अंगूठी भेंट करने की ईसाई धर्म की रीति को पूरा करेगा, भले ही वह दुनिया के किसी कोने में हो ।

कुछ समय के पश्चात् एक मित्र की मृत्यु हो गई । दूसरे के विवाह की तिथि निश्चित हो गई । वह नहीं जानता था कि अब अपने मृत मित्र को निमन्त्रित करने के लिए क्या करे । अतः वह गिरजाघर के पादरी के पास उसकी राय जानने के लिए पहुंचा । उसने पादरी को अपने वायदे के बारे में बताया ।

"यह तो अनर्थ हो गया," पादरी ने कहा । "किन्तु तुम्हें अपना वचन ज़रूर पूरा करना चाहिए । तुम उसे विवाह के समय ज़रूर बुलाओ । भले ही वह मर चुका है । तुम उसकी कब्र पर जाकर वह कहो जो तुम्हें कहना चाहिए । फिर उस पर निर्भर करता है कि वह आता है या नहीं ।"

अतः वह युवक अपने मित्र की कब्र के पास जाकर बोला, "हे मित्र, वह समय आ गया है जिसके बारे में तुमने मुझसे वायदा किया था । अब मेरी शादी के अवसर पर आकर धर्म पिता के तौर पर मुझे अगूंठी भेंट करने की रस्म पूरी करो । फ़लां तिथि को मेरी शादी तय हुई है ।"

इतने में क्या हुआ ? कब्र के भीतर कुछ हलचल हुई और मिट्टी को ऊपर से हटाते हुए उसका मित्र नीचे से बोल पड़ा—

"हां, मैं ज़रूर आऊंगा' मैं अपना वायदा ज़रूर पूरा करूंगा क्योंकि यदि मैंने अपना वचन पूरा न किया तो पता नहीं मुझे कब तक नरक की आग में जलना पड़े ।"

वे दोनों घर लौटे । गिरजाघर में विवाह की रीति सम्पन्न हुई । फिर नवविवाहित मित्र ने सभी अतिथियों को सायं का सहभोज दिया । मृत युवक ने सब तरह की कहानियां सुनानी शुरू कीं किन्तु परलोक के जीवन के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा । दूल्हा मित्र ने उससे किसी प्रकार का प्रश्न

करना उचित न समझा । सहभोज समाप्त होने के बाद मृत युवक खड़ा हो गया और अपने विवाहित मित्र से बोला—

"मित्र, अब तुम प्रसन्न हो कि मैंने तुम्हारे विवाहोत्सव में आकर अपना वायदा पूरा किया । अब क्या तुम थोड़ी देर के लिए मेरे साथ बाहर तक आ सकते हो ?"

"अवश्य, क्यों नहीं आऊंगा ? किन्तु सुनो, केवल कुछ क्षण ही तुम्हारे साथ बिता पाऊंगा । तुम जानते हो कि आज मेरी सुहागरात है · · · "

"क्यों नहीं, जैसा तुम चाहो ।" मृत मित्र ने कहा ।

विवाहित मित्र ने अपनी पत्नी को दिलासा देते हुए कहा, "प्रिये, मैं थोड़ी देर के लिए अपने मित्र के साथ बाहर जा रहा हूं और अभी वापस आया ही समझो ।" यह कह कर वह मृत युवक के साथ बाहर सड़क पर आ गया । दोनों बातें करते-करते मरघट में जा पहुंचे । मृतक की कब्र के पास खड़े होकर दोनों मित्रों ने एक दूसरे का आलिंगन किया । तभी विवाहित मित्र के दिल में विचार आया— 'यदि अभी मैंने इससे स्वर्ग के जीवन के बारे में न पूछा तो फिर कभी नहीं पूछ पाऊंगा, इसलिए ज़रा हिम्मत करके इसे पूछ ही लूं ।' यह सोच कर वह बोला—

"सुनो मित्र क्या मैं एक चीज़ पूछ सकता हूं तुमसे, जो मर चुके हो, क्या बता सकोगे कि परलोक में तुम्हारा कैसा हालचाल है ?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता," मृत मित्र ने उत्तर दिया, "यदि तुम यह सब जानना ही चाहते हो तो मेरे साथ तुम भी स्वर्ग में आकर क्यों नहीं स्वयं देख लेते ।"

जीवित मित्र को भी स्वर्ग देखने की इच्छा हुई । कब्र फिर से खुल गई । जीवित युवक भी मृतक के पीछे-पीछे उसमें कूद पड़ा । दोनों कुछ देर बाद स्वर्ग में जा पहुंचे । मृत युवक अपने मित्र का मार्ग दर्शन कर रहा था । उसने उसे एक कांच का महल दिखाया जिसके द्वार सोने के बने हुए थे । उसके अन्दर देवदूत संगीत के यन्त्र बजा रहे थे । कुछ धन्य पुरुष प्रभु भक्ति में विभोर गीत गा रहे थे और कुछ नाच रहे थे । यह सब देखकर जीवित मित्र का मुंह खुला रहा गया और वह एकटक निहारता रहा । सहसा उसके मित्र ने उसे झिंझोड़ कर कहा, "आओ, अब और आगे चलें ।"

मृतक अपने मित्र को अब एक ऐसे बागीचे में ले आया जहां पर वृक्षों पर तरह-तरह के रंगों के पक्षी चहचहा रहे थे । फ़रिश्ते और परियां प्रेम के वातावरण में खुशी से झूम रहे थे । हर ओर मधुर मुस्कान और चांदनी छिटक रही थी । जीवित मित्र यह देखकर इतना मुग्ध हो गया कि उसे कोई सुध-बुध ही न रही । उसे फिर झटका देकर मृत मित्र ने कहा, "आओ और आगे, अब मैं तुम्हें एक तारा दिखाता हूं ।" उस तारे पर बनी अद्भुत चीज़ें देखकर जीवित मित्र दंग रह गया । पानी की जगह दूध की नदियां बह रही थीं और भूमि पनीर की बनी हुई थी ।

अचानक जीवित मित्र को अपनी पत्नी का ध्यान हो आया । वह अपने मित्र से बोला, "मुझे इधर स्वर्ग में आए बहुत घड़ियां बीत गई हैं । मेरी नवविवाहिता पत्नी को मेरी चिन्ता हो रही होगी । अब मुझे भूमि पर लौट जाना चाहिए ।"

"क्या तुम यहां के जीवन से तंग आ गए हो ?" दूसरे मित्र ने पूछा ।

"नहीं, ऐसी बात नहीं, किन्तु अब मैं घर लौटना चाहता हूं ।"

"यहां पर देखने के लिए और बहुत-सी वस्तुएं हैं ।"

"मैं मानता हूं, किन्तु अब यही अच्छा है कि मैं लौट चलूं ।"

"ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी ।" यह कहकर मृतक उसे अपनी कब्र तक वापस ले आया और फिर लापता हो गया ।

जीवित मित्र उस कब्र से बाहर निकला और उस मरघट को देखकर हैरान रह गया । एक समय की सीधी-सादी उजाड़-सी मरघट की भूमि की जगह अब वहां पर कई स्मारक, कई मूर्तियां और ऊंचे-ऊंचे वृक्ष दिखाई दे रहे थे । वह कब्रिस्तान से बाहर आया । क्या देखता है कि पहले की तरह पत्थरों, ईंटों तथा लकड़ी के घरों के बाजाए बड़ी-बड़ी ऊंची सीमेन्ट की इमारतें खड़ी थीं जिनमें लिफ़्टों से लोग ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे । पक्की सड़कों पर मोटर गाड़ियों का तांता लगा था । आकाश पर वायुयानों की गूंज थी । 'मैं किस शैतान की नगरी में आ टपका हूं ? क्या मैं रास्ता भूल गया हूं ? इन लोगों की वेशभूषा भी कितनी बदल गई है ?' वह मन में सोचने लगा । एक वृद्ध आदमी को अपनी ओर आते देखकर उसने पूछा—

"अरे बाबा, क्या इस जगह का नाम वह · · · नगर तो नहीं ?"

"हां, हां, यही नाम है इस नगर का ।" बूढ़े बाबा ने जवाब दिया ।

"ठीक है, किन्तु मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा है । अच्छा, कृपा करके बताइए कि उस आदमी का घर कहां है जिसकी कल शादी हुई थी ?"

"कल ? यह क्या, मैं स्वयं गिरजाघर में शादी करवाने वाला पादरी हूं । मैं बड़े यकीन के साथ कह सकता हूं कि कल किसी व्यक्ति की शादी यहां नहीं हुई ।"

"यह कैसे ? कल ही तो मेरी शादी हुई थी ।" तब उसने बूढ़े पादरी को सारी कहानी कह सुनाई कि कैसे उसने अपने मृत मित्र के साथ स्वर्ग में एक रात बिताई थी ।

"तुम क्या सपने देख रहे हो," बूढ़े ने कहा । "यह एक पुरानी कहानी है जो सुनने में आई है कि एक दूल्हा था जो अपने मृत मित्र के साथ क़ब्र में उतर गया और फिर वापस नहीं आया । उसकी दुल्हन उसकी याद और वियोग की पीड़ा से मर गई ।"

"नहीं, नहीं, वह दुल्हा तो मैं हूं ! एकदम जीवित आपके सामने!!"

"सुनो, अब एक ही उपाय है । कल प्रातः तुम हमारे गिरजाघर में आकर हमारे मुख्य पादरी, बिशप, से बात करो ।" वृद्ध आदमी ने कहा ।

"बिशप ? हमारे इस छोटे से नगर में तो छोटा पादरी ही रहता है ।" युवक बोला ।

"छोटा पादरी ? यह कब की घिसी-पिटी बातें कर रहे हो ? मैं स्वयं बूढ़ा हो गया हूं और कई सालों से इस बिशप के आदेशों का पालन कर रहा हूं । तुम्हें विश्वास नहीं आता तो मैं स्वयं तुम्हें इस मुख्य पादरी के पास ले चलता हूं ।"

अगले दिन प्रातः युवक मुख्य पादरी के पास पहुंचा । मुख्य पादरी भी बूढ़ा था । जब युवक ने अपनी सारी रामकहानी उसे कह सुनाई तो बूढ़े बिशप ने कहा, "हां, यह कहानी मैंने अपने बचपन में सुनी थी ।" फिर उसने गिरजाघर में हुई शादियों का बहीखाता मंगवाया । पुरानी शादियों का ब्योरा देखने लगा । वह कई पन्ने पलट रहा था । बीस साल पहले की शादियां देखीं । उस युवक का नाम तथा उसकी दुल्हन का कहीं कोई वर्णन नहीं ! तीस

फिर मुख्य पादरी ने गिरजाघर में हुई शादियों का बहीखाता मंगवाया। पुरानी शादियों का ब्योरा देखने लगा।

साल पहले का वृत देखा, पचास साल का देखा, सौ साल का देखा, कहीं उस नवदम्पति का विवरण नहीं। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक बहुत मैले से तीन सौ साल वाले कागज़ पर वह दोनों नाम मिले। बिशप बोला—

"तीन सौ साल पहले की बात है, वह युवक कब्रिस्तान में जाकर लापता हो गया था और उसकी दुल्हन चिन्ता और दुःख से तड़प कर मर गई थी। यह पढ़ लो यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं।"

"किन्तु वह दूल्हा तो मैं हूं।"

"लेकिन तुम तो दूसरी दुनिया में चले गए थे जहां शायद समय की गिनती कुछ और ढंग की होगी। बताओ, बताओ, कुछ मुझे भी परलोक के बारे में," मुख्य पादरी ने पूछा।

किन्तु देखते-देखते ही युवक का शरीर पीला पड़ गया। वह धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा और उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। इस प्रकार वह किसी को भी यह न बता सका कि उसने स्वर्ग में एक रात कैसे बिताई थी।

* * * * *

सुन्दरी और दैत्य

एक समय की बात है कि इटली के लीवोरनो नगर में एक व्यापारी रहता था। उसकी तीन लड़कियां थीं। उनके नाम थे— आसुन्ता, कारोलीना तथा बैलिन्दा। वह बहुत धनी था। उसने तीनों लड़कियों का लालन-पालन ऐसे किया था कि उन्हें किसी चीज़ की कमी महसूस न होने दी थी। तीनों ही सुन्दर थीं, किन्तु सबसे छोटी बहुत ही सुन्दर थी इसीलिए उसका नाम रखा था बैलिन्दा अर्थात् अति सुन्दरी। न केवल वह बहुत सुन्दर ही थी अपितु बहुत ही नम्र तथा सुशील भी थी, जबकि दोनों बड़ी बहनें घमण्डी तथा ज़िद्दी थीं। वे छोटी बहन की प्रशंसा सुनकर बहुत ईर्ष्या करती रहती थीं।

जब वे लड़कियां बड़ी हो गईं तो नगर के कई बड़े-बड़े व्यापारी अपने लड़कों की शादी के लिए उनका हाथ मांगने लगे। किन्तु आसुन्ता तथा कारोलीना बड़ी अकड़ के साथ उन्हें वापस भेज देती थीं। उनका जवाब होता था— 'हम किसी व्यापारी के लड़के के साथ कभी शादी नहीं करेंगी।' जबकि बैलिन्दा बड़ी मधुरता के साथ स्पष्ट करती— 'मैं तो अभी बहुत छोटी हूं, जब ज़रा और बड़ी हो जाऊंगी तब शादी की बात करूंगी।'

किन्तु सभी दिन एक जैसे नहीं रहते। विधाता की गति किसने जानी है! व्यापारी पिता का माल से लदा जहाज़ समुद्री तूफान में नष्ट हो गया। देखते ही देखते धनीमानी पिता पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। वह कौड़ी-कौड़ी का मुहताज हो गया। नगर में उसका सब कुछ बिक गया। ले देकर उसके पास बाहर देहात में एक छोटा-सा घर तथा कुछ ज़मीन बची थी। अपने परिवार सहित वह गांव में आ बसा। अब उसके पास सिवाए अपनी ज़मीन पर एक किसान की तरह काम करने के कोई और चारा नहीं था। कल्पना कीजिए उन दोनों बड़ी बहनों की, उन्होंने कितना नाक-भौं चढ़ाया होगा और कितनी बकवास की होगी जब उन्हें नगर छोड़कर गांव की ओर जाना पड़ा होगा। प्रारम्भ में वह कहने लगीं— "नहीं, पिताजी, हम देहात में जाकर अंगूर की खेती नहीं करेंगी। हम यहीं नगर के सुखद वातावरण में ही रहना चाहती हैं। भगवान की कृपा से यहां पर कितने ही व्यापारी युवक

हमसे शादी करना चाहते हैं।"

मुसीबत में फंसा पिता उन सभी व्यापारी युवकों से मिलने गया जिन्होंने कुछ समय पहले उसकी लड़कियों से शादी करने की इच्छा प्रकट की थी। किन्तु गरीबी में आटा गीला। कंगाल आदमी की लड़कियों से अब कौन शादी करे। उलटा उन व्यापारियों ने उसे ताना देते हुए कहा, "बड़ी अकड़ थी इन लड़कियों की, सीधे मुंह बात तक नहीं करती थीं। अब ज़रा गांव में जाकर काम करें। सब आटे-दाल का भाव मालूम हो जाएगा।" किन्तु जहां उन लोगों को दोनों बड़ी बहनों की टांय-टांय फ़िस होते देख खुशी हो रही थी, वहां बेचारी बैलिन्दा की हालत देख कर उन्हें तरस भी आ रहा था। वह तो इतनी भली थी कि उसने कभी किसी की तरफ आंखें ऊपर करके भी नहीं देखा था। अपितु एक दो साहसी युवकों ने इस बुरे हाल में भी उससे शादी करने का प्रस्ताव किया। किन्तु बैलिन्दा इस विपत्ति के समय अपने पिता की अधिक से अधिक सहायता करना चाहती थी और उसका साथ नहीं छोड़ना चाहती थी, इसलिए उसने तब विवाह करने से इनकार कर दिया।

गांव में पहुंच कर भी बैलिन्दा ही प्रातः सबसे पहले उठती। घर का काफी काम-काज करती। पिता और बहनों के लिए नाश्ता तैयार करती। जबकि दूसरी बहनें प्रातः दस बजे उठतीं और हाथ पर हाथ धर कर बैठी रहतीं। उलटा बेचारी बैलिन्दा को ही जली-कटी सुनाती रहतीं।

एक दिन उनके पिता को एक चिट्ठी मिली जिसमें लिखा था कि उसके नगर लीवोरनो की बन्दरगाह पर वह माल का जहाज़ आ पहुंचा है जिसे वह खोया हुआ समझता था। किन्तु उसके माल का कुछ थोड़ा-सा भाग ही तूफ़ान के झपेटे के बाद बच पाया था। जैसे ही दोनों बड़ी बहनों को माल के बच जाने का पता लगा, वे खुशी से पागल हो उठीं। वे समझने लगीं कि जल्दी ही वे नगर में लौट जाएंगी और फिर से आराम की जिन्दगी बिताने लगेंगी।

नगर को रवाना होने से पहले पिता ने अपनी तीनों लड़कियों को अपने पास बुलाकर कहा, "अब मैं नगर जाकर देखूंगा कि जहाज़ की क्या हालत है और कितना थोड़ा-बहुत माल बच पाया है। मेरी बेटियो, तुम बताओ, तुम्हारे लिए क्या-क्या उपहार नगर से खरीद कर लाऊं?"

आसुन्ता ने कहा— "मेरे लिए एक सुन्दर रेशमी कपड़े का आसमानी रंग का सूट लाना ।" कारोलीना ने कहा, "मेरे लिए मछली रंग का सूट ले आना ।" इनके विपरीत बैलिन्दा चुप रही । बार-बार पूछने पर भी वह यही कहती कि उसे कुछ नहीं चाहिए । जब पिता ने बार-बार ज़िद की तो वह कहने लगी— "मैं समझती हूं कि यह अवसर अभी बहुत खर्च करने का नहीं है। यदि आप ज़रूर कुछ लाना ही चाहते हैं तो मेरे लिए एक गुलाब का फूल ले आना । मुझे यह उपहार लेकर बहुत प्रसन्नता होगी ।" यह सुनकर दोनों बहनें ठट्ठा मार कर उस पर हंस पड़ीं । किन्तु बैलिन्दा ने इसकी कोई परवाह न की ।

लड़कियों से विदा लेकर पिता लीवोरनो नगर चला गया । जैसे ही वह अपने बचे-खुचे माल को जहाज़ से उतरवाने लगा कि कई दूसरे लेनदार व्यापारी अपना कर्ज़ उससे वापस लेने के लिए वहां आ टपके । सब को दे-दिलाकर उस खस्ताहाल पिता के पल्ले कुछ थोड़ा-सा धन ही पड़ा । चूंकि वह दोनों बड़ी लड़कियों की नाराज़गी मोल नहीं लेना चाहता था, अतः उसने उन थोड़े से पैसों से उनके लिए दो सूट खरीद लिए । बैलिन्दा के लिए गुलाब का फूल लेने के लिए उसके पास कुछ न बचा । जिन आशाओं को लेकर वह नगर आया था, उन सब पर पानी फिर गया ।

मुंह लटकाये हुए परेशानी की हालत में वह वापस अपने गांव की ओर चल दिया । चलते-चलते रात हो गई । मार्ग एक जंगल से होकर जाता था । रात को जंगल में चलते-चलते वह अन्धेरे में रास्ता भटक गया । उधर ठण्ड उतर आई । बर्फ़ गिरने लगी । सर्दी और थकावट से उसका बुरा हाल था । कुछ भेड़ियों के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें भी उसे सुनाई दे रही थीं । इस घबराहट में जैसे ही उसने दूसरी ओर गर्दन घुमाई उसे दूर एक रोशनी दिखाई दी । वह उस ओर चल दिया । जैसे ही वह पास पहुंचा उसने देखा कि एक सुन्दर महल से वह रोशनी आ रही थी । महल का द्वार खुला था । वह अन्दर चला गया । किन्तु उसे अन्दर कोई आदमी दिखाई न दिया । उसने इधर-उधर खूब झांका किन्तु उसे कोई न मिला । बैठक की एक दीवार में बनी अंगीठी में आग जल रही थी । वह व्यापारी जो सर्दी के मारे ठिठुर

रहा था, उस अंगीठी के पास बैठ गया । धीरे-धीरे उसके शरीर में गरमी आई । वह सोच रहा था कि अभी कोई न कोई उधर आ निकलेगा । किन्तु व्यक्ति तो क्या किसी पक्षी ने भी उस महल में पर नहीं मारा । थोड़ी देर बाद वह वहां से उठा और भोजन कक्ष में गया । वहां पर भोजन के टेबुल पर कई प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ रखे थे । वह बहुत भूखा तो था ही, खूब भर पेट भोजन किया । फिर शयन कक्ष में गया । वहां पर बड़ा साफ़-सुथरा और नरम बिस्तर बिछा हुआ था । व्यापारी ने अपने जूते उतारे और बिस्तर में घुस गया । लेटते ही वह गहरी नींद सो गया । प्रातः जब वह उठा तो देखा कि बिस्तर के पास कुर्सी पर बड़े अच्छे-अच्छे पुरुषों के कपड़े पड़े थे । उसने नए कपड़े पहने और टहलने के लिए महल के बाहर बागीचे में जा पहुंचा । बागीचे में एक ओर गुलाब के फूल खिल रहे थे । व्यापारी को अपनी छोटी बेटी की इच्छा याद आ गई । उसने सोचा कि क्यों न एक सुन्दर-सा फूल तोड़ कर उसकी इच्छा पूरी की जाए । उसने एक सुन्दर फूल को चुना और उसे तोड़ लिया । उसी समय फूल के पौधे के पीछे कुछहलचल हुई । झट एक भयानक दैत्य पौधों के पीछे से निकला और चिल्ला उठा, "तुम्हें किसने आज्ञा दी है कि तुम मेरे महल में रहकर, खा-पीकर, मेरे कपड़े पहन कर, मेरे ही बागीचे से फूल की भी चोरी करो ? तुम्हें तुम्हारे किए की अभी सज़ा मिलेगी । तुम्हें अपने जीवन से हाथ धोने पड़ेंगे !"

बेचारे व्यापारी के शरीर में काटो तो खून नहीं । भयानक दैत्य को देखकर वह थर-थर कांपने लगा । वह दैत्य के पांवों में गिर पड़ा । और गिड़गड़ाते हुए कहने लगा कि वह फूल उसकी बेटी बैलिन्दा के लिए था । वह गुलाब के फूल के अलावा और कुछ उपहार नहीं चाहती थी । फिर उसने अपनी सारी रामकहानी दैत्य को सुना डाली । व्यापारी पिता की दुःख भरी कहानी सुनकर दैत्य का हृदय पसीज गया । दैत्य ने कहा, "यदि तेरी लड़की इतनी सुन्दर और अच्छी है तो मेरे पास ले आओ । मैं उसे अपनी जान से भी ज्यादा संभाल कर रखूंगा । वह मेरे पास एक रानी की तरह सुख-समृद्धि से रहेगी । किन्तु यदि तू उसे मेरे पास लेकर न आया तो मैं तुझे और तेरे परिवार के किसी जीव को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा ।"

दैत्य की यह शर्त सुनकर व्यापारी पिता के नीचे से मानो ज़मीन ही

सरक गई । इससे पहले कि वह हां या ना में उत्तर दे, दैत्य ने उसे महल में ले जाकर हीरे-जवाहरात तथा सोने चांदी के आभूषणों से भर कर एक डिब्बा दे दिया । फिर उसे शीघ्र ही वहां से वह डिब्बा लेकर घर लौट जाने और अपनी पुत्री को अपने साथ लाने का आदेश देकर उसे विदा कर दिया ।

पिता जैसे ही अपने घर लौटा दोनों बड़ी लड़कियां मुंह बनाती हुईं उससे अपने उपहार मांगने उसकी तरफ लपकीं । जबकि बैलिन्दा ने बड़े संतुष्ट और विचारशील स्वभाव से उसका स्वागत किया । उसने आसुन्ता तथा कारोलीना को उनके रेशमी सूट दे दिए । किन्तु जब बैलिन्दा को फूल देने की बारी आई तो वह फूट-फूट कर रोने लगा । उसने गुलाब का फूल बैलिन्दा को देकर शुरू से आखिर तक अपनी दैत्यवाली मुलाकात की सारी कहानी कह सुनाई ।

बड़ी बहनों ने एकदम यह कहना शुरू कर दिया— "यह देखो, ले लो अपना गुलाब का फूल, हम न कह रही थीं कि इसके अजीब विचार हमें कहीं का न छोड़ेंगे । इसे तो गुलाब का फूल चाहिए, देख लो क्या निकला इसका परिणाम !"

किन्तु बैलिन्दा ने किसी प्रकार की घबराहट अपने मुख पर न लाते हुए अपने पिता से कहा, "दैत्य ने यही कहा है कि यदि मैं उसके पास चली जाऊं तो वह किसी का कुछ नहीं बिगाड़ेगा ? तब, मैं चलती हूं उसके पास, क्योंकि यह अच्छा है कि आप सबको किसी प्रकार का कष्ट होने के बजाए मैं स्वयं कुछ त्याग करूं ।"

पिता बार-बार कह रहा था कि वह अपनी लाड़ली बेटी को उस हिंसक पिशाच के हवाले करने कभी नहीं जाएगा । किन्तु दोनों बड़ी बहनें उस पर नाक-भौं सिकोड़ते हुए कह रही थीं कि वह तो पागल हो गई है । किन्तु बैलिन्दा ने उनकी कोई परवाह न की । उसने झट अपना सामान बांधा और दैत्य के पास जाकर रहने के लिए तैयार हो गई ।

अगले दिन प्रातः पिता तथा उसकी छोटी पुत्री दैत्य के पास जाने के लिए रवाना हो गये । किन्तु चलने से पहले पिता ने दैत्य द्वारा दिए हुए डिब्बे को जिसमें बहुमूल्य आभूषण थे और जिसके बारे में किसी लड़की को पता नहीं था, अपने बिस्तर के नीचे छिपा कर रख दिया ।

सायं को वह दोनों दैत्य के जगमगाते महल में जा पहुंचे । बैठक से होकर वे भोजन कक्ष में गए । देखा कि खाने के लिए दो लोगों का मेज सजा है । उन्हें भले ही बहुत भूख नहीं थी तो भी थोड़ा-बहुत खाना उन्होंने खा लिया । उसी समय बड़े ज़ोर की हलचल हुई । दैत्य की भीमकाय आकृति उनके सामने थी । बैलिन्दा उसे देखकर एकदम सुन्न रह गई । उसने इतनी भद्दी तथा क्रूर शक्ल-सूरत की कभी कल्पना ही नहीं की थी । किन्तु रि धीरे-धीरे उसने साहस बटोरा और दैत्य के सामने शान्त मुद्रा में खड़ी हो गई । उसी समय जब दैत्य ने उससे पूछा कि क्या वह स्वेच्छा से वहां आई है, तो बैलिन्दा ने हां में जवाब दिया ।

यह सुनकर दैत्य बहुत खुश हुआ । उसने पिता को सोने के सिक्कों से भरा हुआ एक सन्दूक दिया और शीघ्र उसे महल से बाहर चले जाने का आदेश दिया । दैत्य ने यह भी कहा कि उसके परिवार के लिए उसे बहुत धन मिल चुका है और फिर वह कभी महल में अपना पांव न रखे । बेचारे पिता ने अपनी प्यारी पुत्री का अन्तिम चुम्बन लिया और भारी दिल के साथ महल से बाहर निकल पड़ा । घर आकर वह बेटी की याद में बिलख-बिलख कर रोने लगा ।

इधर थोड़ी देर बाद दैत्य भी बैलिन्दा से विदा लेकर चला गया । बैलिन्दा अकेली रह गई । वह शयन कक्ष में गई । उसने अपने कपड़े बदले और बिस्तर पर लेट गई । उसके मन में इस बात का सन्तोष था कि उसने अपने पिता तथा बहनों को न जाने किन-किन विपत्तियों से बचा लिया था । अतः वह शान्त मन से गहरी नींद सो गई ।

प्रातः होते ही बैलिन्दा बड़े ठण्डे दिमाग़ तथा आत्मविश्वास के साथ उठी । वह सारे महल को देखने चल पड़ी । उसके कक्ष के बाहर लिखा हुआ था— 'बैलिन्दा का कक्ष' । कपड़ों की अलमारी के बाहर लिखा हुआ था । 'बैलिन्दा की अलमारी' । बल्कि जगह-जगह कई बोर्ड लटक रहे थे जिन पर लिखा था—

'तुम हो यहां की रानी
अब करो अपनी मनमानी'

सायं को जब बैलिन्दा भोजन के पटल पर बैठी, तो उसे कुछ हलचल

सुनाई दी । तभी दैत्य उसे दिखाई दिया । बड़े धीरे से वह बोला, "क्या मैं भोजन पर तुम्हारा साथ दे सकता हूं ।"

बैलिन्दा ने बहुत शिष्टता के साथ उत्तर दिया, "आइए-आइए, आप ही तो इस महल के स्वामी हैं ।"

दैत्ये ने ज़ोर देकर कहा, "नहीं, नहीं, इस जगह की मालकिन तुम हो । यह सारा महल तथा इसके अन्दर पड़ा सब माल-सामान अब तुम्हारा है ।" थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह फिर बोला—

"क्या यह सच है कि मैं बहुत ही बदसूरत हूं ?"

"भले ही देखने में आप बदसूरत तो ज़रूर हैं, किन्तु आपका हृदय इतना अच्छा है कि आप अति सुन्दर लगते हैं ।" बैलिन्दा बोली ।

तब झट दैत्य ने पूछा, "बैलिन्दा, क्या तुम मुझसे विवाह करना पसन्द करोगी ?"

यह सुनते ही बैलिन्दा सिर से पांव तक थर-थर कांप उठी । वह नहीं जानती थी कि क्या उत्तर दे । सोचने लगी, 'यदि मैंने इसे न कहा तो पता नहीं मुझसे कैसा व्यवहार करे ।' फिर उसने हिम्मत करके सचाई कह ही दी—

"यदि आपको सच-सच कहूं तो मेरा आपसे विवाह करने का कोई विचार नहीं है ।"

दैत्य ने बिना बात को आगे बढ़ाए बैलिन्दा को रात्रि का नमस्कार किया और आहें भरता हुआ वहां से उठ कर चला गया ।

इस प्रकार बैलिन्दा पूरे तीन महीने उस महल में रही । हर सायं को दैत्य उसके पास भोजन पटल पर आता । भोजन करने के बाद बैलिन्दा से यही प्रश्न पूछता कि क्या वह उससे विवाह करना चाहती है और बैलिन्दा के न में उत्तर देने पर ठण्डी सांसें लेता हुआ वहां से चला जाता । बैलिन्दा को उससे रोज़ रात्रि को मिलने की ऐसी आदत हो गई थी कि यदि वह किसी रात को वहां न आता तो बैलिन्दा को यह बहुत खलता और वह उसके बिना बेचैन हो उठती ।

बैलिन्दा प्रतिदिन बागीचे में सैर किया करती । दैत्य उसे भिन्न-भिन्न पौधों की खूबियां बताया करता । एक विशेष पत्तेदार पेड़ की ओर

इशारा करते हुए दैत्य ने बताया कि यह रोने और हंसने का पेड़ है । जब इसके पत्ते सीधे ऊपर की ओर खड़े हो जाते हैं तब तुम्हारे घर में सभी हंसते हैं । किन्तु जब इसके पत्ते नीचे की ओर झुक जाते हैं तब तुम्हारे यहां रोना-धोना होता है ।

एक दिन बैलिन्दा ने देखा कि उस हंसने-रोने वाले पेड़ के सभी पत्ते ऊपर की ओर खड़े थे । उसने दैत्य से पूछा, "इसमें खुशी मनाने की क्या बात है ?"

"तुम्हारी सबसे बड़ी बहन आसुन्ता की शादी होने जा रही है ।" दैत्य ने उत्तर दिया ।

"क्या मैं उसकी शादी में शामिल होने नहीं जा सकती ?" बैलिन्दा ने पूछा ।

"क्यों नहीं ।" दैत्य ने कहा । "किन्तु ध्यान रहे, आठ दिनों के अन्दर तुम्हें वापस आना होगा । नहीं तो मुझे मरा हुआ पाओगी । मैं तुम्हें यह अंगूठी देता हूं । जब इसका चमकदार पत्थर मैला होने लगे तो समझ लेना कि मेरी हालत ठीक नहीं और तुम्हें एकदम भागकर मेरे पास आना होगा । इस बीच तुम महल में जाकर शादी के उपहार के लिए जो तुम्हें उचित लगे वे आभूषण और हीरे-मोती एक सन्दूक में भर कर ले जाओ ।"

बैलिन्दा ने उसका धन्यवाद किया । एक सन्दूक में रेशमी कपड़े, आभूषण और सोने के सिक्के भरे और दैत्य की सहायता से अपने पिता के घर पहुंच गई । वहां पहुंचते ही पिता और उसकी बहनों ने भी खूब आवभगत की । किन्तु जब बहनों को पता चला कि वह इतनी धनी तथा सन्तुष्ट थी और दैत्य का व्यवहार भी उससे बहुत अच्छा था तो ईर्ष्या से उनके तन बदन में आग लग गई । बैलिन्दा की अपेक्षा उनका जीवन कहीं कठिन था और फिर आसुन्ता की शादी एक साधारण बढ़ई से हो रही थी । धूर्त कपटी तो वे थीं, उन्होंने बैलिन्दा से उसकी अंगूठी थोड़ी देर देखने के लिए लेकर उसे कही छिपा दिया । अंगूठी न मिलने पर बैलिन्दा घबराहट से रोने लगी । उधर सातवां दिन हो चला था और वह अंगूठी के पत्थर की हालत देखने के लिए बहुत बेचैन थी । उसे रोता और विह्वल देखकर पिता ने दोनों बहनों को खूब
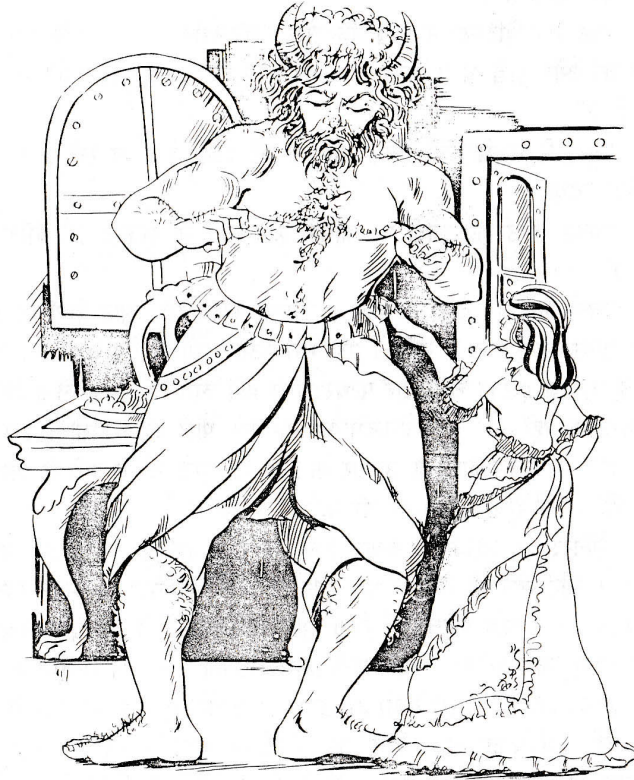
दैत्य ने कहा, "मैं तुम्हें यह अंगूठी देता हूँ। जब इसका चमकदार पत्थर मैला होने लगे तो समझ लेना कि मेरी हालत ठीक नहीं और तुम्हें एकदम भागकर मेरे पास आना होगा ।"

डांटा और अंगूठी वापिस बैलन्दा को दिलवाई । जैसे ही बैलिन्दा ने अगूंठी के पत्थर को देखा वह उदास हो गई क्योंकि वह पत्थर पहले की तरह चमकदार नहीं था । अतः बैलिन्दा शीघ्र अपने पिता से विदा लेकर महल में लौट आई ।

भोजन का समय हो गया । बैलिन्दा अकेली भोजन पटल पर बैठी थी किन्तु दैत्य नहीं आया । बैलिन्दा को चिन्ता हुई । उसने उठकर दैत्य को सब ओर खोजना शुरू कर दिया । आवाज़ें लगा-लगा कर बुलाने लगी । किन्तु दैत्य का कोई पता नहीं । फिर लौटकर वह भोजन कक्ष में बिना भोजन किए बैठ गई । इतने में बड़ी दुखी हालत में दैत्य ने आकर कहा, "सुनो, मेरी हालत बहुत खराब हो गई थी । यदि तुमने आने में और देर की होती तो मुझे मरा हुआ पातीं । क्या तुम मेरा भला नहीं चाहतीं ?"

"क्यों नहीं, मैं तुम्हें हमेशा बहुत चाहती हूं ।" बैलिन्दा ने उत्तर दिया ।

"क्या मुझसे शादी करोगी ?"

"आह, यह नहीं हो सकता ।" बैलिन्दा बोली ।

और दो महीने बीत गए । एक बार फिर वह हंसने-रोने वाले पेड़ के पास से गुज़र रहे थे । बैलिन्दा ने देखा कि पेड़ के पत्ते फिर ऊपर की ओर नोक करके खड़े हो गए हैं । दैत्य ने उसे बताया कि अब उसकी दूसरी बहन कारोलीना की शादी हो रही है । इस बार भी बैलिन्दा वह अंगूठी और उपहार वाला सन्दूक लेकर गई । बहनों ने फिर नाक-भौं चढ़ाकर उसका स्वागत किया । बड़ी आसुन्ता तो और भी चिड़चिड़ी और दुष्ट वृत्ति वाली हो गई थी क्योंकि उसका बढ़ई पति उसकी खूब पिटाई करता था । छल-कपट से दोनों बहनों ने बैलिन्दा की अंगूठी फिर चुरा ली । और जब उसे अंगूठी वापस मिली तब चमकदार पत्थर काला पड़ चुका था ।

बैलिन्दा बड़ी चिन्ता के साथ वापस आई । महल के सब ओर उसने दैत्य की खोज की जो उसे कहीं नहीं मिला । अगले दिन प्रातः बड़ी दुर्दशा में दैत्य ने आकर बैलिन्दा से कहा, "मैं तो बड़ी क़ठिनाई से मरते-मरते बचा हूं । फिर कभी देर न करना, वरना मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं ।"

कुछ और महीने गुज़र गए । एक दिन हंसने-रोने वाले पेड़ के पत्ते नीचे की ओर लुढ़क गए । "मेरे घर में क्या मुसीबत आ गई ?" चिल्ला

कर बैलिन्दा ने पूछा ।

"तुम्हारा पिता अब मृत्यु शैया पर लेटा है ।" दैत्य ने बताया ।

"आह, मुझे एक बार उससे मिलने जाने दीजिए । इस बार मैं वादा करती हूं कि बहुत जल्दी लौट आऊंगी ।" बैलिन्दा ने दैत्य से प्रार्थना की ।

दैत्य से विदा लेकर वह अपने पिता के घर पहुंच गई । बेचारे रोगी पिता को अपनी सबसे छोट बेटी से मिलकर बहुत खुशी हुई । बैलिन्दा ने दिन-रात उसकी इतनी सेवा-शुश्रूषा की, कि वह धीरे-धीरे ठीक होने लगा । किन्तु एक दिन जब बैलिन्दा ने हाथ धोने के लिए अगूंठी को उतार कर रखा तो बड़ी बहनों ने उसे गायब कर दिया । जब बहनों की अनुनय प्रार्थना करके उसको अंगूठी वापस मिली तो उसका पत्थर काला पड़ चुका था ।

बड़ी घबराहट के साथ वह महल में वापस लौटी । सब ओर अंधेरा ही अंधेरा था । बहुत रो-रो कर वह दैत्य को पुकारने लगी । अचानक उसे बागीचे से कुछ कराहने की आवाज़ आई । उसने दौड़ कर देखा कि दैत्य कांटेदार झाड़ियों पर लेटा हुआ तड़प रहा था । फिर उसकी आवाज़ बन्द हो गई । बैलिन्दा उसके पास घुटनों के बल बैठकर रोते हुए उसे उठाने लगी । वह चिल्ला रही थी, "दैत्य, उठो, आंखें खोलो, यदि तुम इस तरह मर जाओगे तो मेरे लिए अच्छा न होगा । यदि तुम ठीक हो जाओ तो मैं तुम्हें खुश रखने के लिए तुमसे झट शादी कर लूंगी ।"

अभी वह बात समाप्त नहीं कर पाई थी कि तुरन्त सारा महल जगमगाने लगा । हर खिड़की से मधुर गीतों की आवाज़ आने लगी । जैसे ही बैलिन्दा ने झाड़ियों पर लेटे दैत्य की तरफ देखा वह वहां से गायब हो चुका था । उसकी जगह एक सुन्दर राजकुमार उसके सामने खड़ा उसे नमस्कार कर कह रहा था, "धन्यवाद बैलिन्दा, तुमने मुझे एक शाप से मुक्त करा दिया है ।" हैरानी से बैलिन्दा बोली, "किन्तु मैं तो दैत्य को चाहती हूं ।" राजकुमार ने उत्तर दिया, "वह दैत्य मैं ही था, किसी जादू के चक्र में मुझे तब तक भयावह दैत्य बनकर रहना था जब तक कोई सुन्दर युवती मुझसे शादी करने का वादा न करती ।"

बैलिन्दा ने अपना हाथ प्रेम से युवक के हाथ में दे दिया । दोनों

खुशी-खुशी महल में गए । युवक के पिता ने बड़ी धूमधाम से उनका विवाह किया । बाद में वह युवक स्वयं राजा बना और बैलिन्दा उसकी प्यारी रानी । बड़े लम्बे काल तक उन्होंने सुख-समृद्धि से जीवन बिताया और प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखा ।

* * * * *

डण्डे का कमाल

एक समय की बात है । एक अनाथ लड़का था । उसका नाम प्रातो था । जब वह छोटा था तो इधर-उधर भटकता रहता था । सभी उसे निकम्मा तथा बुद्धू समझ कर घृणा करते थे । किन्तु वह गृहिणियों और उनकी नौकरानियों के छोटे-मोटे काम कर देता था जैसे लकड़ी काटना, कुंए से पानी लाना, आदि और वे उसे कुछ खाने-पीने के लिए दे देती थीं । किन्तु जब वह लगभग अठारह वर्ष का हुआ तो उस पर कृपा करने वाले भी उसे आवारा समझ कर उसे डांटने-डपटने लगे ।

दर-दर की फटकार से तंग आकर एक दिन उस अनाथ बेसहारा प्रातो ने अपना गांव छोड़कर कहीं और दुनिया में अपना भाग्य आज़माने का निश्चय कर लिया । गांव छोड़ने से पहले वह अपनी सगी बहन चिकलामीना से विदाई लेने गया । उसकी बहन ने उसे कहा ।

"मैं तुम्हें एक छोटी-सी चीज़ देना चाहती हूं ताकि तुम्हें अपनी प्यारी बहन की याद आती रहे । मैं बहुत धनी नहीं हूं अतः तुम्हें कीमती वस्तु तो दे नहीं सकती । हां, मेरे पास हमारी परदादी की एक जादुई मैली-कुचैली, फटी पुरानी कमीज़ है ।"

प्रातो यह सुनकर अपनी निराशा के हावभाव को छिपा न सका ।

"तुम मेरी देन को तुच्छ मत जानो, ओ प्यारे प्रातो । तुम सोच भी नहीं सकते कि यह तुम्हें कितनी उपयोगी सिद्ध होगी । तुम इसे भूमि पर बिछाकर जिस चीज़ को मांगोगे तुम्हें मिल जाएगी और जो काम तुम चाहोगे वह पूरा हो जाएगा ।"

प्रातो ने उस देन को खुशी-खुशी स्वीकार किया । बहन को गले लगाया और अपने भाग्य को आज़माने लम्बी यात्रा पर रवाना हो गया । सायं को उसे बहुत भूख लगी । उसके पास न कोई खाने की वस्तु थी और न ही रुपए-पैसे । वह बड़ा परेशान होने लगा क्योंकि उसे बहन द्वारा दिए गए उपहार पर कोई विश्वास नहीं था । उसे तो उस फटी-पुरानी कमीज़ से किसी प्रकार के चमत्कार की आशा नहीं थी । तो भी परख के तौर पर उसने कमीज़

को भूमि पर बिछाया और बड़बड़ाया ।

"परदादी की कमीज़, मुझे एक आलू का परांठा चाहिए ।"

और यह क्या ? धीरे-धीरे उसे परांठे की छाया दिखाई दी और फिर सचमुच एक गरमागरम स्वादिष्ट परांठा उसके सामने था ।

प्रातो पहले तो उसे छूने से डर रहा था । फिर हिम्मत करके उस पर हाथ फेरा, देखा कुछ नहीं हुआ । फिर मुंह में थोड़ा-थोड़ा डाल कर मज़े से खाने लगा । उसके बाद उसने केक माँगा । केक भी आ गया । अभी वह मज़े-मज़े उसे खा ही रहा था कि देखा एक बूढ़ा भिखारी कहीं से उधर आकर उसके सामने घास पर बैठ गया था । भिखारी ललचाई दृष्टि से उस की ओर देख रहा था ।

"क्या तुम मेरे साथ भोजन करना चाहते हो, बाबा ?" युवक ने पूछा ।

बूढ़े भिखारी का चेहरा एकदम खिल उठा । पास आकर प्रातो के साथ वह भी भोजन करने में शामिल हो गया । किन्तु जब भिखारी ने प्रातो की चमत्कारी कमीज़ देखी, उसने प्रातो से प्रार्थना की कि वह कमीज़ उसे दे दे ।

"इस कमीज़ के बदले में मैं तुम्हें अपना जादू का डण्डा देता हूं ।" भिखारी ने कहा ।

"और इस डण्डे से मैं क्या करूं ?" युवक ने पूछा ।

"यदि तुम इस डण्डे के गुणों को जान लोगे तो स्वेच्छा से मेरा प्रस्ताव स्वीकार करोगे । इसके अन्दर एक हज़ार छोटी-छोटी कोशिकाएं हैं और हर कोशिका के अन्दर एक सशस्त्र घुड़सवार सैनिक छिपा है । हर बार जब तुम्हें किसी सहायता की जरूरत होगी तुम्हें इतना आदेश देना होगा । 'सेना, आओ बाहर ।' और फिर देखना टप-टप करती घुड़सवार सेना तुम्हारा अगला आदेश पूरा करने में जुट जाएगी ।"

प्रातो ने सदा सेनापति बनने के सपने देखे थे । अतः वह उस प्रलोभन को रोक न सका । उसने भिखारी को कमीज़ देकर उससे डण्डा ले लिया और आगे चल दिया । किन्तु कुछ देर के बाद वह पछताने लगा ।

'मुझे बहुत भूख लग रही है और मेरी वह कमीज़ मेरे पास नहीं है ।

मैं एक सेना को लेकर क्या करूं जब मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हों ?' उसने सोचा ।

उसे भूख सता रही थी । अपना ध्यान बदलने के लिए उसने डण्डा ज़मीन पर टिका दिया और आदेश दिया, "सेना, आओ बाहर !"

तभी डण्डे के अन्दर हलचल हुई । लकड़ी के अन्दर छोटी-छोटी खिड़कियां खुल गईं । हर खिड़की से मधुमक्खी की तरह एक छोटी-सी चीज़ बाहर निकली । फिर पल भर में बढ़ने लगी । जैसे ही वह और बड़ी हुई उसने एक सशस्त्र सैनिक और उसके घोड़े का रूप धारण कर लिया ।

प्रातो को झट एक विचार आया । उसने सेना को आदेश दिया, "जाओ, जल्दी से उस भिखारी का पीछा करो और मेरी परदादी की कमीज़ उससे वापस लेकर आओ ।"

सेना ने सरपट घोड़े दौड़ाते हुए प्रस्थान किया । वह क्षितिज की ओर गायब हो गई । फिर थोड़ी देर बाद प्रातो की कमीज़ लेकर वापस आ गई ।

"सेना, घुस जाओ अपनी छावनी में ।" प्रातो ने आज्ञा दी ।

प्रातो ने डण्डा जमीन पर टिकाया । घोड़े तथा घुड़सवार छोटे होने लगे । फिर मधुमक्खी की तरह छोटे हो गए । फिर डण्डे की कोशिकाओं में घुस गए । खिड़कियों के द्वार बन्द हो गए । डण्डा फिर ऐसे लगने लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं ।

प्रातो अब बहुत प्रसन्न था । उसके पास अब जादू की कमीज़ और डण्डा दोनों ही थे । वह फिर आगे बढ़ चला और एक पनचक्की पर जा पहुंचा । चक्कीवाला बाहर घास पर बांसुरी बजा रहा था और उसके नौ बच्चे और पत्नी उसके चारों ओर नाच रहे थे । जैसे ही प्रातो उनके पास पहुंचा उसका भी नाचने का मन कर आया और वह भी उनके साथ बड़ी लय के साथ नाचने लगा । इतने में चक्कीवाले की पत्नी ने नाचते-नाचते ही अपने पति को कोसना शुरू कर दिया ।

"बस! बस! बिना हृदय के व्यक्ति ! हमें रोटी चाहिए । यह जबरदस्ती का नाच-गाना नहीं ।" फिर प्रातो की ओर देखते हुए पत्नी ने कहा—

तभी डण्डे के अन्दर हलचल हुई । लकड़ी के अन्दर छोटी-छोटी खिड़कियां खुल गईं । हर खिड़की से मधुमक्खी की तरह एक छोटी सी चीज़ बाहर निकली ।

"ज़रा इस नालायक पति को देखो! जितनी बार मैं इसे बच्चों का पेट भरने के लिए कहीं से खाना जुटाने की बात करती हूं यह जादू की बांसुरी लेकर बैठ जाता है ।"

थोड़ी देर बाद चक्कीवाले ने बांसुरी बजाना बन्द कर दिया । चक्कर खाकर नाच रहे उसके बच्चे, उसकी पत्नी तथा प्रातो सब भूमि पर गिर पड़े । प्रातो को उनके साथ सहानुभूति हुई । उसने भूमि पर जादू की कमीज़ बिछाई और स्वादिष्ट भोजन का आदेश दिया । देखते-देखते ढेर सारे पकवान सबके सामने हाज़िर थे । प्रातो ने चक्कीवाले के परिवार को भोजन में शामिल होने के लिए कहा । वह सभी चकित होकर भरपेट भोजन करने लगे ।

भोजन समाप्त होने पर चक्कीवाले ने प्रातो से कहा—

"तुम अपनी जादू की कमीज़ मुझे दे दो और मैं अपनी बाँसुरी इसके बदले में तुम्हें देता हूं ।"

प्रातो ने यह अदला-बदली स्वीकार कर ली क्योंकि वह जानता था कि थोड़ी देर में उसे क्या करना है । उस चक्कीवाले परिवार से विदा लेकर प्रातो अभी थोड़ी दूर आगे गया था कि उसने अपने एक हज़ार घुड़सवार सैनिकों को आदेश दिया कि वह चक्कीवाले से उसकी कमीज़ वापस ले आएं । और देखते ही देखते सैनिक उसकी कमीज़ लेकर आ गए ।

'अब मेरे पास जादू की कमीज़, डण्डा और बांसुरी तीनों ही हैं । मुझे अब और कुछ नहीं चाहिए,' उसे सोचा ।

सायं को वह एक नगर में पहुंच गया । वहां पर उसने बड़े-बड़े अक्षरों में एक सरकारी घोषणा देखी जिसमें बताया गया था कि जो कोई राजा की बेटी को उसके विषाद रोग से ठीक करेगा, राजा उसके साथ राजकुमारी की शादी कर देगा ।

प्रातो शीघ्र ही राज दरबार में पहुंच गया । उसने राजकुमारी को रोग से मुक्त करने का आश्वासन राजा को भिजवाया । राजा उस समय विदेशी अतिथियों के साथ भोजन कर रहा था । इतना व्यस्त होते हुए भी उसने शीघ्र ही प्रातो को राजमहल में बुलाया । प्रातो बहुत बड़े कक्ष में जगमगाती रोशनी में सोने चांदी की मेज, कुर्सियां तथा अन्य वस्तुएं देखकर दंग रह गया । अतिथियों के साथ कीमती वेशभूषा में राजा तथा रानी बैठे थे । उनके पहलू में बहुत सुन्दर किन्तु एकदम पीली तथा उदास राजकुमारी बैठी थी ।

प्रातो ने राजकुमारी का इलाज शुरू करने की आज्ञा मांगी, जो कि राजा ने उसे दे दी । प्रातो राजकुमारी के पास गया और फिर सेवक की सहायता से उसकी दोनों टांगें कुर्सी के साथ बांध दीं । यह उसने ऐसे चुपचाप किया कि किसी कक्ष में उपस्थित अन्य लोगों को तनिक पता न चला । फिर चुपके से कक्ष के एक कोने में खड़े होकर उसने जादू की बाँसुरी बजानी शुरू कर दी । उसने जैसे ही मधुर तान बजाई सभी लोग अपने-अपने स्थान छोड़कर नाचने में मस्त होने लगे ।

क्या राजा, क्या अमीर, क्या सामन्त, क्या राजदूत और तो और क्या नौकर क्या चाकर, सभी अपना स्थान और काम छोड़कर अत्यन्त सम्मोहक नाच में झूम रहे थे । किसी की नकली बालों वाली टोपी नीचे गिर गई और उसकी चांद चमक रही थी, किसी महिला के लम्बे वस्त्र किसी और के साथ उलझ रहे थे । ऐसा अत्यन्त रोचक दृश्य देखकर राजकुमारी अपनी कुर्सी से बंधी ठहाके मार-मार कर हंस रही थी । उसकी सारी उदासी ऐसे गायब हो गई थी जैसे गधे के सिर से सींग । राजकुमारी कोई एक घण्टे तक हंसती रही । जैसे ही प्रातो ने बाँसुरी बजाना बन्द किया सभी धड़ाम से एक दूसरे के ऊपर गिर गए । राजकुमारी की हंसी का कोई ठिकाना नहीं था ।

"पिता जी, मैं बिलकुल ठीक हो गई हूं और यह युवक मुझे बहुत पसन्द है ।" उसने राजा को कहा । राजा ने खुशी-खुशी प्रातो की शादी राजकुमारी से कर दी । प्रातो ने अपनी प्यारी बहन को भी वहां बुला लिया और सब सुख से रहने लगे ।

* * * * *

उपकार का फल

पुत्र ने अपनी पाठशाला की पढ़ाई–लिखाई समाप्त कर ली तो उसके पिता ने उससे कहा, "हे पुत्र, तुमने अपनी पढ़ाई–लिखाई समाप्त कर ली है । अब तुम ठीक अवस्था में पहुंच गए हो कि कुछ यात्रा करके व्यापार में मेरा हाथ बटाओ । मैं तुम्हें एक सामान की नौका ले देता हूं । तुम उसमें माल लाद कर ले जाओ । सागर पार दूसरे नगर में माल बेच कर उधर का माल इस नगर में ले आना । फिर इधर माल बेचकर अच्छा धन कमाना सीख लेना ।"

व्यापारी पिता ने अपने युवक पुत्र को सामान खरीदने के लिए सात हज़ार मुहरें दीं और पुत्र यात्रा पर चल निकला । जब वह अपनी नौका के पास समुद्र तट पर पहुंचा तो उसने देखा कि एक मृत व्यक्ति की लाश अर्थी पर पड़ी थी और सभी गुज़रनेवाले उस लाश के ऊपर एक आध मुहर भीख के रूप में फेंकते जाते थे ।

युवक ने पूछा, "इस मरे हुए आदमी को ऐसे क्यों रखा है ? मृतक को तो जल्दी से जल्दी दफ़ना देना चाहिए ।"

"यह वह आदमी है जिस पर मरते समय कर्ज़ का बहुत बोझ था ।" उन लोगों ने व्यापारी पुत्र को जवाब दिया, "और यहां पर ऐसा रिवाज है कि यदि किसी व्यक्ति ने मरने से पहले अपने कर्ज़ को पूरी तरह चुकता नहीं किया तो उसे दफ़नाया नहीं जाता । इस प्रकार जब तक इस मरे आदमी के पास भीख में दिया गया इतना धन इकट्ठा नहीं हो जाता जिससे कि इसका कर्ज़ साफ़ हो जाए, इसे दफ़नाया नहीं जाएगा ।"

"तब आप लोग खूब चिल्लाकर उन सब लोगों को बुलाइए जिन्होंने इस मृत व्यक्ति को उधार दे रखा था । मैं उन सबका कर्ज़ इस मरे आदमी की तरफ से चुकता करना चाहता हूं ।" उस युवक ने ज़ोर देकर कहा, "फिर इसकी भली भांति दफ़नाने की रस्म पूरी की जाए ।"

कुछ लोगों ने चिल्ला कर सभी ऋणदाताओं को बुलाया । उस युवक ने उन्हें धन देकर मृत व्यक्ति का कर्ज़ा चुका दिया और अब उसके पास फूटी कौड़ी भी न रही । खाली हाथ लटकाते हुए वह घर लौट आया ।

"क्या नया समाचार है ? बड़ी जल्दी लौट आए हो ?" उसके पिता ने पूछा । और पुत्र ने जवाब दिया– "मै सामान लेकर समुद्र में नौका में जा रहा था कि समुद्री लुटेरों ने मुझ पर हमला कर दिया और मेरा सब माल लूट कर ले गए ।"

पिता ने कहा, "कोई बात नहीं, मेरे बेटे, इतना गनीमत समझो कि तुम्हारी जान बच गई! मैं तुम्हें और धन देता हूं ताकि तुम फिर से माल खरीद कर व्यापार कर सको । किन्तु इस बार ध्यान रखना । समुद्र में उस ओर दोबारा न जाना जिधर लुटेरे सब कुछ छीनने आ निकलते हैं ।" और पिता ने पुत्र को फिर सात हज़ार मुहरें दे दीं ।

"हां, पिताजी, आप चिन्ता मत कीजिए । इस बार मैं अपना मार्ग बदल लूंगा ।" पुत्र ने कहा ।

धन लेकर पुत्र फिर यात्रा पर चल दिया ।

वह अपनी नौका में सवार होकर अभी समुद्र के बीच ही पहुंचा था कि उसने एक तुर्की देश का माल का जहाज़ देखा । उस युवक ने अपने मन में सोचा, 'यहां इन लोगों से दोस्ती करना अच्छा रहेगा । मैं उनके जहाज़ पर जाता हूं और बाद में उन्हें अपनी नौका पर बुलाऊंगा ।'

यह सोचकर उसने तुर्की के लोगों को ज़ोर से बुलाया और उनके जहाज़ पर जा पहुंचा । युवक ने उनसे पूछा, "आप कहां से आ रहे हैं ?"

"हम लोग मध्यपूर्व के तुर्की देश से आ रहे हैं," उन्होंने उत्तर दिया ।

"आप कौन–सा सामान लेकर आ रहे हो ?" युवक ने फिर पूछा ।

"और तो कुछ नहीं, केवल एक सुन्दर लड़की है!"

"इसे आप किसके पास ले जा रहे हो ?"

"जो इसे खरीदना चाहे, हम इसे बेचना चाहते हैं । यह हमारे राजा की लड़की है । हम इसे चोरी से भगा लाए हैं । देखना चाहोगे कि यह कितनी सुन्दर है ।"

"हां, हां, मुझे जरूर दिखाइए," युवक ने कहा ।

तब युवक को उन लोगों ने लड़की को दिखाया । उसे वह लड़की बहुत ही अच्छी लगी ।

"आप इसके कितने पैसे चाहते हैं ?" उसने पूछा ।

"केवल सात हजार मुहरें ।" उन लोगों ने बातया ।

इस प्रकार उस युवक ने उन लोगों को वह सारा धन दे दिया जो उसके पिता ने उसे व्यापार करने के लिए दिया था । वह लड़की को साथ लेकर अपनी नौका पर आ गया । उसने उस लड़की से शादी कर ली और अपने घर लौट आया ।

"आओ, आओ, मेरे बेटे, क्या कीमती माल लेकर आये हो ।" पिता ने पूछा ।

"पिताजी, मैं एक बहुत ही कीमती हीरा लेकर आया हूं जिस पर आपको बहुत गर्व होगा ।" पुत्र ने उत्तर दिया । "देखिए, न इसके लिए किसी बन्दरगाह की जरूरत है और न जहाज़ की, इससे बढ़कर आपने कभी कोई और सुन्दर लड़की नहीं देखी होगी । यह तुर्की के सुलतान की बेटी है और तुर्की में ही मैं अपना सबसे पहला सामान लेकर जाऊंगा ।"

"अरे कमबख्त गधे! क्या यह माल है जिसके लिए मैंने तुम्हें व्यापार करने भेजा था ? निकल जा मेरे घर से बाहर ।" यह कह कर पिता ने गुस्से से उन दोनों को घर से बाहर निकाल दिया ।

वे दोनों मुसीबत के मारे, नहीं जानते थे कि कहां कोई ठौर-ठिकाना ढूंढ़ें और खाने के लिए क्या उपाय करें ।

"कैसे करें ?" युवक ने कहा । "मुझे तो कमाने का कोई तौर-तरीका नहीं आता ।"

"सुनो, घबराने की कोई बात नहीं ।" लड़की ने उसे कहा, "मुझे बहुत अच्छी चित्रकारी आती है । मैं प्रतिदिन सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाकर तुम्हें दिया करूंगी और तुम बाज़ार में जाकर उन्हें बेच आया करो । किन्तु ध्यान रहे, किसी को यह पता नहीं लगना चाहिए कि ये चित्र मैंने बनाए हैं ।"

इस बीच तुर्की के सुलतान ने अपनी लड़की का पता करने के लिए कई सरकारी कर्मचारियों को जहाज़ों में चारों ओर भेजा । संयोग से एक जहाज़ उसी नगर में आ पहुंचा जहां पर दोनों पति-पत्नी चित्र बेच कर अपना निर्वाह कर रहे थे । उस जहाज़ से बहुत से लोग बन्दरगाह पर उतरे । ठीक वहीं वह युवक अपने चित्र लेकर आ पहुंचा और उन नए आये विदेशी लोगों को अपने चित्र दिखाने लगा ।

तुर्की के लोगों ने उन चित्रों को बड़े ध्यान से देखा और आपस में काना-फ़ूसी करने लगे— 'यह तो हमारे सुलतान की बेटी के बनाए हुए चित्र लगते हैं । और कोई, हूबहू उस जैसे चित्र तो नहीं बना सकता ।' सुलतान के कर्मचारियों ने आगे बढ़कर उस युवक से पूछा, "यह कैसे बेच रहे हो ?"

"यह थोड़े महंगे हैं ज़रूर, किन्तु हैं बहुत बढ़िया, कोई भी चित्र बीस मुहरों से कम का नहीं है ।" युवक ने उत्तर दिया ।

"ठीक है, हम यह सब खरीद लेते हैं । किन्तु हमें ऐसे बहुत से और चित्र भी चाहिए ।"

"बहुत अच्छा, तब आप मेरे घर आ जाइये, वहां पर मेरी पत्नी ऐसे सब चित्र बनाती है ।"

तब वे तुर्की लोग उसके घर जा पहुंचे । अपने राजा की लड़की को वहां पर देखकर वे बहुत खुश हुए । उन्होंने लड़की को पकड़ लिया । अपने साथ ज़बरदस्ती जहाज़ पर ले आए और जहाज़ वापस तुर्की देश जा पहुंचा ।

अभागा युवक बिना पत्नी, बिना कामकाज तथा बिना पैसे के दर-दर भटकने के लिए रह गया । निराश होकर वह समुद्र तट पर चला जा रहा था कि उसकी नज़र एक बूढ़े व्यक्ति पर पड़ी जो अपनी छोटी-सी नौका में बैठ कर मछलियां पकड़ रहा था ।

युवक सहसा बोल उठा, "हे भद्र पुरुष, आप मुझ से कहीं अच्छी हालत में हैं ।"

"क्यों, ऐसी क्या बात है, प्यारे बेटे ?" बूढ़े व्यक्ति ने कहा ।

"हे महापुरुष! मेरे पास जीविका का कोई साधन नहीं, क्या मैं आपके साथ मछली पकड़ने का काम कर सकता हूं ?"

"ठीक है, यदि तुम मेरे साथ आना चाहते हो, तो आ जाओ छलांग मार कर मेरी किश्ती में," बूढ़े ने उसे बुलाया ।

'तू ले हाथ में छड़ी और मैं ले कर किश्ती
पकड़ लेंगे हम दोनों एक बड़ी मछली!'

और पलक झपकते ही युवक किश्ती में आ सवार हुआ । उन दोनों ने एक समझौता कर लिया कि जो कुछ जीवन में प्राप्त करेंगे उसे आधा-आधा

बांट लेंगे, चाहे वह लाभ हो या हानि, भला हो या बुरा । और इस समझौते को शुरू किया वृद्ध आदमी ने अपना आधा खाना उस युवक को देकर ।

रात्रि का भोजन करने के बाद वे नौका में ही सो गए । आधी रात को समुद्र में एक भयानक तूफ़ान आया । हवा की दशा किनारे से दूसरी ओर थी । देखते ही देखते उनकी नौका लहरों पर खिलवाड़ करती हुई उस नगर से बहुत दूर जा निकली । प्रातः जब दिन चढ़ा तो तूफ़ान थम चुका था और नौका तुर्की के तट पर जा लगी थी ।

तुर्की सैनिकों ने जैसे ही एक विदेशी नौका देखी, वे इसकी ओर दौड़े और नौका में सवार दोनों इतालवी लोगों को पकड़ कर सुलतान के पास ले गए । सुलतान ने इस दोनों को अपने महल के बाग़ में माली के काम पर लगा दिया । राजा के बाग़ में वह दोनों मज़े से रहने लगे । उन्होंने महल के बाकी कामकाज करने वालों से भी दोस्ती कर ली । खाली समय में बूढ़ा व्यक्ति गिटार, वायलिन, आदि संगीत यन्त्रों को बनाता और युवक अपनी सुरीली आवाज़ में इन वाद्य-यन्त्रों को बजा कर मधुर गीत गाया करता ।

सुलतान ने अपनी बेटी पर चौकसी रखते हुए उसे अपने महल के एक ऊंचे मीनार में बन्द कर रखा था, जहां पर केवल उसकी सेविकाएं ही उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखती थीं । जब युवक नीचे बागीचे में मधुर आवाज़ में वाद्य-यन्त्र के साथ गीत गाता तो राजकुमारी को अपने पति की याद आ सताती । वह मन ही मन कह उठती— 'केवल उसका पति 'सुन्दर मुख' (वह अपने पति को इस नाम से ही बुलाया करती थी) ही इन यन्त्रों को ऐसे बजाना जानता है और यह संगीत की आवाज़ भी उसकी लगती है । यह कौन हो सकता है जो उसकी तरह संगीत यन्त्र बजाता है और गाता है ?'

उसने खिड़की से नीचे बागीचे की ओर झांका । उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि संगीतकार सचमुच उसका पति था ।

राजकुमारी ने प्रतिदिन अपनी सेविकाओं को बाग़ में भेजना शुरू कर दिया ताकि वे एक-दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ फूलों से भर कर उसके पास लाया करें । इस प्रकार कई टोकरियाँ फूलों से लद कर उसके पास आने लगीं । एक दिन राजकुमारी ने अपने बहुत भरोसे की नौकरानी को कहा कि वह उस गायक माली को समझा कर उस टोकरी में बिठाकर ऊपर से फूलों से

राजकुमारी ने खिड़की से नीचे बागीचे की ओर झांका । उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि संगीतकार सचमुच उसका पति था ।

ढककर उसके पास ले आए ।

इसी प्रकार हुआ । सेविकाएं उसे टोकरे में छिपा कर पहरेदारों के आगे से होती हुई उसे मीनार में राजकुमारी के पास ले आईं। जब युवक टोकरी से बाहर निकला तो वह यह देख कर हैरान हो गया कि उसकी पत्नी राजकुमारी वास्तव में उसके सामने थी । उन दोनों ने एक दूसरे का आलिंगन किया और अपनी-अपनी कहानी एक-दूसरे को कह सुनाई । फिर दोनों ने वहां से चुपके से खिसक जाने की योजना बनाई ।

अपनी सेविकाओं की सहायता से राजकुमारी ने एक जहाज़ तैयार करवाया, जिसमें हीरे, जवाहरात तथा सोने-चांदी के आभूषणों सहित युवक 'सुन्दर मुख', राजकुमारी तथा उसकी सेविकाएं सवार हो गईं । जहाज़ लंगर उठा कर युवक के नगर की ओर अभी चला ही था कि युवक को बूढ़े आदमी से किया हुआ अपना समझौता याद आ गया । उसने अपनी पत्नी से कहा, "मेरी प्यारी, भले ही मुझे जीवन से हाथ धोने पड़ें, किन्तु मैं महल के बाग़ में लौट कर अपने साथी बूढ़े व्यक्ति को अपने साथ ज़रूर लाऊंगा । मैं अपने समझौते से मुंह नहीं फेर सकता! मैंने उस भले आदमी को हर चीज़ जो मुझे प्राप्त है आधी-आधी बांटने का वचन दिया है और मैं इसे ज़रूर पूरा करूंगा ।"

जहाज़ वापस तट पर खड़ा हो गया । बूढ़े आदमी को बुलाया गया । उसे भी जहाज़ पर सवार करा कर, गहरे समुद्र की ओर जहाज़ चल पड़ा । युवक 'सुन्दर मुख' ने बूढ़े आदमी को कहा, "हे भद्र पुरुष, आओ हम पहले अपना हिसाब-किताब कर लें । इस जहाज़ में जो धन दौलत है उसका आधा भाग आपका है और आधा मेरा ।"

"और तुम्हारी पत्नी ?" बूढ़े आदमी ने कहा, "उसका भी आधा हिस्सा मेरा है और आधा तुम्हारा ।"

तब युवक ने उसे उत्तर दिया— "हे भले आदमी, तुम्हारे मुझ पर बहुत एहसान हैं । यह सब धन-दौलत मैं पूरे की पूरी आपके लिए छोड़ता हूं किन्तु मेरी पत्नी आप मेरे लिए छोड़ दें ।"

फिर बूढ़ा आदमी बोला— "तुम सचमुच बहुत उदार हृदय हो । अब

मैं तुम्हें एक मज़े की बात बताना चाहता हूं । वास्तव में मैं उस मृत आदमी की आत्मा हूं जिसके दफ़नाने के अन्तिम संस्कार पर तुमने बहुत दान-पुण्य किया था— आज जो यह सब धन-सम्पदा तुम्हें प्राप्त हुई है यह केवल उस पुण्य कर्म के कारण है ।"

तब वृद्ध आदमी ने उसे आशीर्वाद दिया और फिर वहां से लुप्त हो गया । जब जहाज़ इटली में उस युवक के नगर में पहुंचा तो सुन्दर मुख तथा उसकी पत्नी का खूब स्वागत हुआ । सुन्दर मुख अब नगर का सबसे धनी व्यक्ति था । युवक के पिता को जब पता लगा तो वह भी भागा-भागा आया और खुशी से अपने नेक पुत्र को गले लगा लिया । अपना सारा जीवन सुन्दर मुख ने दान पुण्य के कार्यों में बिताकर दूर-दूर तक यश प्राप्त किया ।

* * * * *

हाज़िरजवाब नौकर

एक बार फ्लोरैन्स नगर में एक सामन्त रहता था । उसे खाने-पीने और शिकार का बहुत शौक था । प्रायः वह घोड़े पर सवार होकर अपने शिकारी कुत्तों तथा बाज़ के साथ शिकार करने जाया करता था । एक दिन शिकार पर जाते हुए उसके बाज़ ने एक सारस पर झपट कर उसको मार दिया । सामन्त ने सोचा क्योंकि यह सारस बहुत मोटा और जवान है इसलिए खाने के लिए बहुत मज़ेदार रहेगा । वापस अपने महल में लौट कर उसने अपने बहुत समझदार तथा निपुण रसोइए को बुलाया । उसका नाम कीकिबयो था ।

"इसे पकड़ो और सायं को भोजन के समय खूब अच्छी तरह भून कर और मिर्च-मसाला लगाकर ले आना ।" सामन्त ने उससे कहा ।

रसोइए ने सारस को लेकर साफ-सुथरा किया । फिर बड़े ध्यान से आग पर भूनने लगा । उस रसोइए की मंगेतर उसके घर के थोड़ा पास ही रहती थी । सारस के भूनने की खुशबू सूंघ कर वह रसोइए के पास आई । उस युवती ने देखा कि रसोइया बड़े मज़े से मिर्च-मसाला लगाकर सारस को भून कर तैयार कर रहा था । वह उससे कहने लगी—

"प्यारे कीकिबयो, यह सारस तो बड़ा मज़ेदार लगता है । इसकी एक टांग तोड़कर खाने के लिए मुझे दे दो ।"

"नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है ? इसे तो मेरे मालिक ने सारे का सारा ही अपने सामने अतिथियों के साथ खाना है ।" रसोइए ने जवाब दिया ।

"तो इसकी एक टांग मुझे नहीं दोगे ? मैं तुम से रूठ जाऊंगी । मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी ।" युवती ने धमकी दी ।

रसोइए को उस लड़की से बहुत प्यार था । वह उसे नाराज नहीं करना चाहता था । न चाहते हुए भी उसने सारस की एक जांघ काट कर युवती को दे दी । युवती ने खड़े-खड़े ही चटा-चट मज़े ले लेकर उसे साफ़ कर दिया ।

रात्रि को भोजन के समय सामन्त तथा उसके अतिथियों के सामने वह सारस बिना एक टांग के खाने में रखा गया । उसे देखकर सामन्त

हक्का-बक्का रह गया । उसने झट कीकिबयो को बुलाया और उससे पूछा- "इस सारस की दूसरी टांग कहां गई ?"

चालाक रसोइए ने झट जवाब दिया, "श्रीमान्, सारसों की तो एक ही जांघ और एक ही टांग होती है ।"

सामन्त ने कहा, "यह कैसे ? बदमाश, सारसों की एक जांघ और एक टांग होती है ? मैंने तो ऐसे सारस कभी नहीं देखे ।"

रसोइए ने आश्वासन देते हुए कहा, "हां, श्रीमान् जैसा मैंने कहा है ऐसा ही होता है । आप हे मेरे मालिक, जब आप चाहेंगे मैं बाहर चलकर आपको दिखा दूंगा ।"

चूंकि सामन्त के कुछ अतिथि उसके साथ भोजन कर रहे थे वह बात को और आगे खींचना नहीं चाहता था । इसलिए उसने कहा, "अच्छा, ठीक है, तुम मुझे ऐसा सारस दिखाना जिसे मैंने न कभी देखा है और न कभी सुना है । मैं कल प्रातः ही तुम्हारे साथ नगर के बाहर सैर करने चलूंगा । यदि तुम मुझे एक टांग वाले सारस दिखा पाए तो ठीक, अन्यथा तुम्हारी ख़ैर नहीं ।"

अगले दिन प्रातः नगर से बाहर नदी की ओर जाने के लिए घोड़े तैयार किए गए । सामन्त अपने दल-बल के साथ अभी भी गुस्से की हालत में महल से बाहर आया । रसोइए को भी बुलाया गया । एक घटिया से घोड़े पर उसे भी सवार कराया गया और सब घोड़ों पर सवार सामन्त के पीछे-पीछे नगर से बाहर चल दिए । जैसे-जैसे यह दल नदी की उस ओर बढ़ रहा था जहां पर प्रायः सारस पाए जाते थे, वैसे-वैसे रसोइया मन-ही-मन घबरा रहा था ।

सामन्त ने फिर अपना घोड़ा रसोइए के घोड़े के पास ले जाकर कहा, "वह देखो सामने नदी आनेवाली है । अभी पता चल जाएगा कि कल रात तुमने कितना झूठ बोला है ।" रसोइया मन-ही-मन सोच रहा था कि अभी उसकी शामत आई की आई । उसका बस चलता तो अपने घोड़े को एड़ लगाकर कहीं भाग जाता किन्तु सामन्त का दल उस पर पूरी नज़र रखे हुए था । उसे डर लग रहा था कि यदि नदी के किनारे सभी सारस अपनी दोनों टांगों पर खड़े मिले, तो क्या होगा ।

यह शोर सुनकर सारसों ने अपनी दूसरी टांग भी नीचे रख दी । दोनों टांगों पर थोड़ी देर रेतीली ज़मीन पर चलने के बाद वे उड़ गए ।

थोड़ी देर बाद सारा दल नदी किनारे पहुंच गया । लगभग दस-बारह सारस रसोइए के सौभाग्य से मछली पकड़ने के लिए एक ही टांग पर खड़े थे । उन्हें देखकर रसोइए का मुख खुशी से खिल उठा । वह झट बोल पड़ा—

"देखिए, देखिए श्रीमान्, मैंने कल रात सच ही तो कहा था । सब सारस एक ही जांघ और एक ही टांगवाले होते हैं । वह देखिए है न सब की एक ही टाँग ?"

तब सामन्त ने उन्हें देखकर कहा, "ज़रा ठहर, अभी तुम्हें पता चल जाएगा कि इनकी दो टांगें होती हैं कि नहीं !"

यह कह कर सामन्त उन सारसों के थोड़ा और पास गया । घोड़े से उतर कर उसने ज़ोर से शोर मचाया— "औ! औ!!"

यह शोर सुनकर सारसों ने अपनी दूसरी टांग भी नीचे रख दी । दोनों टांगों पर थोड़ी देर रेतीली ज़मीन पर चलने के बाद वे उड़ गए ।

तभी झट सामन्त ने अपने रसोइए को डांट लगाई, "अरे हरामख़ोर, पेटू, अब देख, तुझे दो टांगें दिखाई दीं की नहीं ?" रसोइया अन्दर से भले ही डर रहा था किन्तु था हाज़िरजवाब । बड़ी हिम्मत से बोल उठा, "श्रीमान्, कल रात भोजन के समय जब मैंने सारस को आपके सामने रखा था तब आपने 'औ, औ' कह कर शोर नहीं मचाया था । यदि आप ऐसा करते तो सारस अपनी दूसरी टांग भी बाहर निकाल देता । ठीक जैसे इन सब सारसों ने किया है ।"

सामन्त को यह जवाब बहुत अच्छा लगा । उसका सारा गुस्सा दूर हो गया । उसने बाकी सब लोगों के साथ हंसते हुए कहा, "कीकिबयो, तुम ठीक कहते हो, मुझे कल भोजन के समय ऐसा ही करना चाहिए था ।"

इस प्रकार रसोइए की हाज़िरजवाबी से सारा वातारण हंसी-मज़ाक में बदल गया और सभी खुशी-खुशी वापस लौट आए ।

* * * * *

वह जगह जहां कोई नहीं मरता

एक दिन एक युवक ने कहा— "मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि सभी लोगों को एक दिन मरना है। मैं तो उस गांव की खोज के लिए निकल पड़ना चाहता हूं जहां कोई कभी भी नहीं मरता।"

उसने अपने पिता, माता, चाचा तथा चचेरे भाइयों को नमस्कार किया और विदा हो गया। वह कई दिन चलता रहा। कई महीने चलता रहा और उन सब लोगों से जिन्हें वह मार्ग में मिलता एक ही बात पूछता कि क्या वे उसे वह जगह बता सकते हैं जहां कभी कोई नहीं मरता। किन्तु कोई भी वैसी जगह को नहीं जानता था। एक दिन उसकी मुलाकात एक बूढ़े आदमी से हुई जिसकी दाढ़ी उसकी छाती तक लटक रही थी। वह बूढ़ा पत्थरों से भरे ठेले को खींच रहा था। युवक ने उससे पूछा, "क्या आप मुझे वह जगह बताएंगे जहां कोई कभी नहीं मरता ?"

"क्या तू मरना नहीं चाहता ? तो मेरे पास रह जा। जब तक मैं उस पहाड़ के एक-एक पत्थर को अपने ठेले में डाल कर उसे बिलकुल साफ़ नहीं कर दूंगा, तू नहीं मरेगा।"

"कितना समय लगेगा इस पहाड़ को बिलकुल सफाचट करने में ?"

"सौ साल, मेरे विचार में।"

"और तब उसके बाद मुझे मरना होगा ?"

"हां, सो तो है।"

"नहीं, तब यह जगह मेरे अनुकूल नहीं है। मैं तो उस जगह जाना चाहता हूं जहां कोई कभी भी नहीं मरता।"

उसने बूढ़े व्यक्ति को नमस्कार किया और आगे बढ़ गया। वह चलता गया, चलता गया और एक ऐसी घनी झाड़ियों के जंगल में पहुंचा जिसका कोई अन्त ही दिखाई नहीं देता था। उस जंगल में उसने एक बूढ़े आदमी को देखा जिसकी दाढ़ी उसकी नाभि तक पहुंच रही थी। वह अपने हाथ में एक हंसिया लिए पेड़ों की टहनियां काट-काट कर छंटाई कर रहा था। उस युवक ने बूढ़े सज्जन से पूछा, "कृपा करके आप बताएंगे कोई ऐसी

जगह जहां कभी कोई नहीं मरता ?"

"तू मेरे साथ ठहर जा।" बूढ़े ने उसे कहा, "जब तक कि मैं इस सारे जंगल को अपनी दरांती से काट कर साफ़ न कर दूं, तू नहीं मरेगा।"

"और इसे साफ़ करने में कितना समय लगेगा ?"

"यही कोई दो सौ साल।"

"और फिर उसके बाद तो मुझे मरना होगा ?"

"निश्चय ही, क्या इतने साल तुम्हें काफ़ी नहीं हैं ?"

"नहीं, यह जगह मेरे लिए उपयुक्त नहीं है। मैं तो उस जगह की खोज में जाता हूं जहां कभी कोई नहीं मरता।" युवक ने उत्तर दिया।

वह युवक फिर आगे बढ़ गया। एक सायं वह एक शानदार महल के आगे आ पहुंचा। उसने द्वार खटखटाया। एक बूढ़े आदमी ने जिसकी दाढ़ी पैरों तक लटक रही थी दरवाज़ा खोल कर पूछा, "क्या चाहिए, भले युवक ?"

"मैं उस जगह को ढूंढ़ रहा हूं जहां कोई कभी नहीं मरता।"

"शाबाश, तुम ठीक जगह पर आ पहुंचे हो। यह ठीक वही जगह है जहां पर कोई नहीं मरता। जब तक तुम यहां मेरे पास रहोगे, निश्चिंत रहो तुम नहीं मरोगे।"

"आखिरकार मैं ठीक जगह पहुंच ही गया। कितने मैंने चक्कर काटे, कितनी मैंने दौड़-धूप की !! ठीक यही जगह ही तो है जिसे मैं ढूंढ़ रहा था। किन्तु क्या आपको कष्ट तो न होगा, यदि मैं आपके पास यहां रह लूं ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं, उलटे मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। एक और एक ग्यारह। तुम्हारे साथ मेरा भी यहां दिल और बहलेगा।" बूढ़े पुरुष ने जवाब दिया।

इस प्रकार वह युवक उस महल में बूढ़े सज्जन के साथ शाही ठाठ के साथ जीवन व्यतीत करने लगा। कई वर्ष गुज़र गए और किसी को समय बीतते पता ही नहीं चला। फिर और वर्ष बीते और वर्ष, और वर्ष। सहसा एक दिन उस युवक ने बूढ़े आदमी से कहा, "भगवान की कृपा से आपके साथ रहने में मुझे बहुत मज़ा आ रहा है, किन्तु अब मुझे अपने

सगे-सम्बन्धियों की याद सता रही है । मेरी बड़ी इच्छा है कि एक बार मैं जाकर देख लूं कि वह सब लोग गांव में कैसे हैं ।"

"कौन से सगे-सम्बन्धी जिन्हें तुम जाकर देखना चाहते हो ? वे सब तो बहुत समय पहले मर चुके हैं ।"

"हां, हो सकता है । अब मैं क्या कहूं ? मेरी बड़ी कामना है कि मैं वह जगह तो देख आऊं जहां मैंने बचपन गुज़ारा था । और, कौन जाने मेरी भेंट मेरे सगे-सम्बन्धियों के बच्चों के बच्चों से हो जाये ।"

"यदि यह विचार तुम्हारे मन में है तो मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हें क्या करना चाहिए । तुम मेरी घुड़साल में जाओ । वहां पर मेरा सफ़ेद घोड़ा है, जो हवा की तरह उड़ता है । उस पर सवार होकर तुम यहां से रवाना हो जाओ । किन्तु ध्यान रहे कि कभी भी उसकी काठी से नीचे मत उतरना, चाहे कोई भी वजह क्यों न हो । क्योंकि जिस समय तुम काठी से नीचे उतरोगे, उसी क्षण तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी," बूढ़े व्यक्ति ने चेतावनी देते हुए कहा ।

"मुझ पर भरोसा रखिए, मैं नीचे नहीं उतरूंगा । मुझे मृत्यु से सचमुच बहुत डर लगता है," युवक ने उत्तर दिया ।

वह युवक घुड़साल में गया। सफ़ेद घोड़े को बाहर लाया । उसकी काठी को ठीकठाक किया और छलांग मारकर उस पर चढ़ बैठा । पलक झपकते ही वह हवा की तरह वहां से नौ दो ग्यारह हो गया । पहले वह वहां पहुंचा जहां पर घनी झाड़ियों का जंगल था और जहां बहुत पहले एक बूढ़ा अपनी दरांती से उन्हें छांट कर साफ़ कर रहा था । अब वह सब जगह सफाचट मैदान थी । वहां पर एक भी पेड़ दिखाई नहीं दे रहा था । युवक ने सोचा—'मैंने अच्छा किया था जो आगे निकल गया था । यदि मैं उस बूढ़े के साथ यहां पर ठहरा होता तो उसकी तरह अब तक मैं भी मौत के मुंह में पहुंच गया होता ।'

वह आगे बढ़ गया । अब वह वहां पहुंचा जहां पर पहले बहुत बड़ा पहाड़ था और एक बूढ़ा एक-एक पत्थर को ढोकर उसे साफ़ कर रहा था । अब उस जगह पर पहाड़ का कोई नामो निशान नहीं था । वह जगह एकदम ऐसे समतल थी जैसे बिलियर्ड खेल का मेज़ होता है ।

यहां रह कर भी मेरा वही हाल होना था जो यहां वाले बूढ़े का हुआ होगा । बेचार कब का मर-खप गया होगा । फिर वह घोड़े पर आगे बढ़ गया । बढ़ता ही गया और अन्त में अपने गांव में जा पहुंचा । यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसका गांव कितना बदल चुका था । वह तो उसे पहचान ही नहीं पा रहा था । उसने अपना घर खोजने की कोशिश की । किन्तु वहां पर उसकी पूरी की पूरी गली ही गायब थी । असने अपने माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों के बारे में पूछा । किन्तु वहां पर कोई उनके नाम से भी परिचित नहीं था । अपने आपको पूरी तरह अजनबी पाकर उसे बहुत बुरा लगा । अब अच्छा यही है कि मैं एकदम यहां से वापस अपने महल को लौट जाऊं, उसने सोचा ।

उसने घोड़े का मुंह घुमाया और वह वापस चल दिया । अभी उसने आधा रास्ता भी तय नहीं किया था कि उसे एक छकड़ेवाला मिला । उसका छकड़ा पुराने घिसे जूतों से लदा था और एक बैल उसे खींच रहा था । छकड़ेवाले ने घोड़े पर सवार युवक को देख कर कहा, "श्रीमान जी, मुझ पर थोड़ा एहसान कर दीजिए । कृपा करके आप एक क्षण घोड़े से उतर कर मेरे छकड़े के एक पहिये को जो इस कच्चे मार्ग में धंस चुका है, निकालने में मेरी सहायता कर दीजिए ।"

"नहीं, मुझे जल्दी है, मैं काठी से नीचे नहीं उतर सकता ।" युवक ने जवाब दिया ।

"कृपया मुझ पर यह एहसान कर दीजिए, यहां मैं बिलकुल अकेला हूं । फिर रात होनेवाली है ।" छकड़े वाले ने मिन्नत की । छकड़ेवाले की दयनीय दशा देखकर युवक को तरस आ गया । वह घोड़े से उतर पड़ा । अभी उसका एक पैर रकाब में ही था और दूसरा भूमि पर, कि छकड़ेवाले ने लपक कर उसे पकड़ लिया और कहा—

"आहा! अन्त में मैंने तुझे पकड़ ही लिया । तू जानता है मैं कौन हूं ? तो सुन, मैं मौत हूं! क्या तू देख रहा है वे सब घिसे-फटे जूते जो छकड़े में लदे पड़े हैं, किसके हैं ? वे सब मेरे हैं जो मैंने तेरे पीछे भाग-भाग कर घिसा दिए पर तू मेरी पकड़ में नहीं आया । अब तू नीचे आ गिरा है । तैयार हो जा मरने के लिए । हर एक को मेरे हाथों एक

छकड़े वाले ने कहा, "श्रीमान जी, कृपा करके आप एक क्षण घोड़े से उतर कर मेरे छकड़े के एक पहिये को जो इस कच्चे मार्ग में धंस चुका है, निकालने में मेरी सहायता कर दीजिए ।"

दिन खत्म होना होता है । प्रकृति के नियम के अनुसार मृत्यु से कोई नहीं बच सकता !"

और उस अमर रहने की इच्छा वाले युवक को मृत्यु ने वहीं ढेर कर दिया ।

* * * * *

सन्तोषी पुरुष की कमीज़

एक राजा का एक ही लड़का था और वह उसे अपनी आंखों का तारा मानता था । किन्तु राजकुमार सदा दुखी रहता था । वह कभी महल से बाहर नहीं निकलता था । बस अपने कमरे के बाहर छज्जे पर खड़ा होकर दूर-दूर तक देखता रहता था ।

"तुझे किस बात की कमी है ?" राजा ने उसे पूछा । "क्या बात है तुम्हारे मन में जिससे तुम दुखी रहते हो ?"

"मुझे कुछ नहीं पता पिताजी, मैं कुछ नहीं जानता ।" राजकुमार ने उत्तर दिया ।

"क्या तू किसी लड़की से प्रेम करता है ? यदि कोई लड़की तेरी नज़र में है तो मुझे बता । मैं उसी के साथ तेरी शादी कर दूंगा । भले ही वह किसी बहुत बड़े राजा की बेटी हो या किसी निर्धन की ।"

"नहीं पिताजी, मैं किसी लड़की को नहीं चाहता ।"

पिता ने अनेक उपाय किए जिससे उसका दिल बहल जाये । उसे कई नाटक, नृत्य, तथा संगीत घरों में ले जाया जाता, किन्तु सब बेकार । दिन-प्रतिदिन राजकुमार का मुख पीला पड़ता जा रहा था । उसकी हालत बिगड़ती ही जा रही थी ।

तंग आकर राजा ने सब जगह एलान कर दिया कि उसे किसी ऐसे समझदार व्यक्ति की ज़रूरत है जो उसके बेटे को सुखी तथा स्वस्थ कर सके । राजा ने कई दार्शनिकों, वैद्यों तथा अध्यापकों को अपने पास बुलाया । उन्हें अपना बेटा दिखाया और उसे सुखी करने के लिए उनसे सलाह मांगी । वे सब विद्वान थोड़ी देर के लिए आपस में परामर्श करने के लिए राज दरबार से बाहर आ गए । फिर वापस राजा के पास जाकर उन्होंने कहा—

"हे महाराज, हमने आपस में खूब सोच-विचार किया है । कई नक्षत्रों का अध्ययन किया है । हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि आप उस आदमी की खोज कराइए जो हर प्रकार से सन्तुष्ट हो, जिसे किसी चीज़ की कमी न हो । तब आप उस आदमी की कमीज़ लाकर अपने

बेटे को पहना दीजिए, आपका बेटा एकदम अच्छा-भला होकर खुश रहने लगेगा ।"

उसी दिन ही राजा ने सब ओर अपने दूत भेज दिए ताकि किसी अत्यन्त प्रसन्न तथा सन्तुष्ट व्यक्ति का पता लगा सकें । कुछ दूत अपने साथ एक पादरी को लेकर राजदरबार में आये ।

"क्या तुम बहुत सन्तुष्ट हो ?" राजा ने उस पादरी से पूछा ।

"जी हां, महाराज ।"

"ठीक, तो क्या तुम मेरे राज के मुख्य पादरी बिशप बनना पसन्द करोगे ?"

"हां, महाराज, काश यह पद मुझे प्राप्त हो जाए!"

"तुम चले जाओ यहां से, एकदम बाहर ! मैं एक ऐसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट आदमी की खोज में हूं जिसे और कुछ नहीं चाहिए । मुझे ऐसा आदमी नहीं चाहिए जिसे किसी ऊंचे पद की तलाश हो," राजा ने कहा । राजा कुछ समय तक फिर किसी और व्यक्ति की तलाश में लगा रहा । कुछ लोगों ने उसे बताया कि उसके पड़ोस के इलाके का राजा बहुत प्रसन्न तथा सन्तुष्ट था । उसकी पत्नी बहुत सुन्दर तथा सुशील थी । उसके सभी लड़के शिष्ट तथा अच्छे थे । उसने सदा अपने शत्रुओं पर विजय पाई थी और उसके राज्य में सब ओर सुख और शान्ति थी । दुःखी राजा ने बड़ी आशा के साथ अपने दूतों को उस पड़ोसी राजा के पास उसकी कमीज़ लाने के लिए भेज दिया ।

पड़ोसी राजा ने इन दूतों का स्वागत करते हुए कहा, "हां, यह ठीक है कि मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है किन्तु दुःख तो मुझे इस बात का है कि जिस किसी के पास ये सब पदार्थ हैं उसे एक दिन मरना पड़ेगा और ये सब कुछ यहीं छोड़ जाना पड़ेगा! इस चिन्ता से मुझे इतना दुःख होता है कि कई बार सारी-सारी रात मुझे नींद नहीं आती ।" और इस तरह वहां से भी निराश होकर वे दूत वापस आ गए ।

अपनी निराशा तथा दुःख को भुलाने के लिए एक दिन वह राजा शिकार के लिए निकल पड़ा । दूर जंगल में उसे एक खरगोश दिखाई दिया । राजा ने देखा कि वह एक टांग से लंगड़ा रहा था । राजा ने उसे पकड़ने की कोशिश की, किन्तु वह खरगोश जो जान-बूझ कर लंगड़ा

"सौभाग्यशाली युवक," राजा ने कहा "मैं तुझे वह सब कुछ दूंगा जो तू चाहेगा। किन्तु मुझे दे दे, मुझे दे दे ... ।"

"क्या महाराज ?" युवक ने पूछा ।

कर चल रहा था राजा के पास आते ही उछल कर भाग निकला । राजा ने उसका पीछा किया और इस तरह वह अपने सैनिकों से बिछुड़ गया । वह और आगे गया तो कुछ खेतों के बीच उसे एक आदमी के मधुर लोकगीत गाने की आवाज़ सुनाई दी । राजा ने रुक कर सोचा— 'जो इतना आनन्द विभोर होकर इतने मज़े से गा रहा है वह ज़रूर ही एक सन्तुष्ट व्यक्ति होगा ।' उस गाने की आवाज़ का पीछा करता हुआ राजा अंगूरों की बेलों के पास जा पहुंचा । बेलों के झुण्ड में उसने एक युवक को देखा जो बेलों की छटनी करते हुए गा रहा था । राजा उसके सामने जा खड़ा हुआ ।

"नमस्कार महाराज," उस युवक ने अचानक राजा को देख कर कहा । "आज इतने सेवेरे आप इधर इन खेतों में कैसे आ पधारे ?"

"तू बहुत भाग्यशाली है, क्या तू चाहता है कि हम तुझे अपने साथ अपनी राजधानी ले चलें ? तू मेरा मित्र बनकर मेरे साथ रहना पसन्द करेगा ?"

"अरे, अरे, महाराज यह आप क्या कह रहे हैं, नहीं, मैं ऐसी बातें सपने में भी नहीं सोच सकता । आपके सुझाव का धन्यवाद । मुझे नहीं जाना किसी भी राजधानी में इन खेतों को छोड़ कर । चाहे ईसाई धर्माध्यक्ष पोप महाशय भी मुझसे अपना स्थान बदलना चाहें ।"

"किन्तु क्यों ? तू एक इतना सुन्दर युवक होकर . . . ।" राजा यह कह ही रहा था कि युवक बोल उठा ।

"किन्तु नहीं महाराज, मैंने एक बार कह दिया है कि मैं यहां पर ही खुश हूं और मुझे कहीं नहीं जाना ।"

'आख़िरकार एक सन्तुष्ट व्यक्ति तो मिला ।' राजा ने सोचा । फिर कहा, "अच्छा युवक सुनो, क्या तू मुझ पर एक कृपा करेगा ?"

"यदि कर सका, तो पूरे हृदय से करूंगा, महाराज ।"

"तो एक क्षण ठहर ।" और राजा, जो खुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था, जल्दी से पीछे मुड़कर अपने को खोज रहे राजदरबारियों को बुलाने लगा । "इधर आओ ! आओ सब लोग इधर ! देखो, मेरा बच्चा बच गया है । मेरा बच्चा बच गया है।" राजा दरबारियों को उस युवक के पास

बुलाकर ले आया ।

"सौभाग्यशाली युवक," राजा ने कहा "मैं तुझे वह सब कुछ दूंगा जो तू चाहेगा । किन्तु मुझे दे दो, मुझे दे दो · · · ।"

"क्या, महाराज ?" युवक ने पूछा ।

"मेरा बेटा दिन-प्रतिदिन मौत के पास जा रहा है ! केवल तू ही उसे बचा सकता है । आ इधर आ, ज़रा ठहर ।" राजा ने उसे पकड़ कर उसके कोट के बटन खोलने शुरू कर दिये । कोट के बटन खुलते ही राजा एक दम झटके से सुन्न हो गया । मानो उसके हाथों के तोते उड़ गए हों । या उसके नीचे से ज़मीन सरक गई हो वह धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ा ।

क्यों ? क्योंकि उस प्रसन्नचित सन्तुष्ट व्यक्ति के पास कोई कमीज़ ही नहीं थी !

* * * * *

सबसे बड़ा धूर्त

एक बार एक स्थान पर तीन धूर्त इकट्ठे हो गए । उनके नाम थे क्रीके, क्रोके और मानीको । उन तीनों में एक शर्त लगी कि देखें कौन सबसे बढ़कर धूर्त है । तीनों एक मार्ग पर चल पड़े । क्रीके सबसे आगे था । उसने देखा कि एक मुटरी चिड़िया एक पेड़ पर अपने घोंसले में अण्डों को सेने के लिए बैठी है । क्रीके ने अपने साथियों से कहा—

"क्या आप मेरी चतुराई देखना चाहते हैं ? मैं इस चिड़िया के अण्डे, बिना इसे पता लगे इसके नीचे से, इसके घोंसले में से चुपके-चुपके निकाल कर ला सकता हूं ।"

"हां, क्यों नहीं, ज़रा लाकर तो दिखाओ ।" दोनों बदमाशों ने उसे उत्तर दिया ।

देखते ही देखते क्रीके अण्डे चुराने के लिए पेड़ पर चढ़ गया । जैसे ही वह चिड़िया के नीचे से अण्डे चुरा रहा था कि क्रोके ने उसके जूतों के नीचे से दोनों तलवों की एड़ियां काट लीं और उन्हें झट अपनी टोपी के अन्दर छिपा लिया । किन्तु जैसे ही उसने जूतों के तलवों की एड़ियों को अपने सिर पर टोपी के नीचे रखा, तीसरे धूर्त मानीको ने उन्हें वहां से चुरा लिया ।

थोड़ी देर बाद क्रीके पेड़ से उतरा और बोला, "सबसे बड़ा धूर्त मैं हूं क्योंकि मैंने चिड़िया के नीचे से अण्डे निकाल लिये हैं ।"

तब क्रोके ने कहा, "सबसे बड़ा धूर्त मैं हूं क्योंकि मैंने तेरे जूतों के नीचे से एड़ियां काट लीं और तुझे पता भी नहीं चलने दिया ।" फिर उन एड़ियों को दिखाने के लिए जैसे ही उसने अपनी टोपी हटाकर सिर पर हाथ रखा, वह हैरान रह गया क्योंकि एड़ियां वहां से ऐसे गायब थीं जैसे गधे के सिर से सींग ।

इस विचित्र स्थिति में मानीको ने मज़ा लेते हुए कहा, "सबसे बड़ा धूर्त मैं हूं क्योंकि मैंने बिना तुझे पता चलने दिए तेरे सिर से एड़ियां गायब कर दीं । क्योंकि मैं तुम दोनों से अधिक समझदार हूं इसलिए मैं तुम दोनों से अलग होकर अपनी किस्मत आज़माना चाहता हूं ।"

यह कह कर मानीको ने अपना अलग रास्ता नापा । वह एक अलग शहर में चला गया । वहां पर उसने शादी कर ली और कुछ धन इकट्ठा करके मांस विक्रेता की दुकान खोल ली । दोनों दूसरे दुष्ट लोग कुछ चोरी-चकारी कर अपना निर्वाह करते रहे । चोरी-चकारी के चक्कर में वे दोनों लोग भी एक दिन उसी नगर में आ निकले । नगर में घूमते हुए वे मानीको की दुकान के आगे रुक गए । उन्हें वह बड़ी चमक-दमक वाली दुकान लगी और वहीं चोरी करने का उन्होंने विचार किया । दुकान पर मानीको नहीं था बल्कि उसकी पत्नी थी ।

दोनों धूर्तों ने दुकान के अन्दर प्रवेश किया । पत्नी को देखकर वे बोले, "श्रीमती जी, हमें खाने के लिए कुछ देंगी ?"

"क्या चाहिए ?" पत्नी ने पूछा ।

"हमें कुछ पनीर और मुर्गी की टांग चाहिए ।"

जब वह पत्नी ये चीज़ें देने में व्यस्त थी तो वे दोनों यह ताड़ रहे थे कि उस दुकान से रात को क्या चोरी किया जाए । उन्हें एक पूरी मरी हुई बकरी एक कोने में पड़ी दिखाई दी । उन्होंने आंखों से आपस में इशारा किया कि रात को इसे लेकर चम्पत हो जायेंगे ।

मानीको की पत्नी ने भी उनकी आंखों के इशारों को भांप लिया, किन्तु कुछ नहीं कहा और उन्हें सामान देकर विदा कर दिया । जब कुछ देर बाद उसका पति वहां आया तो उसने मानीको को सब किस्सा कह सुनाया । पत्नी के विवरण से मानीको सब समझ गया कि वे दोनों धूर्त कौन हो सकते हैं । 'हो न हो, वे दोनों क्रीके तथा क्रोके लगते हैं और मेरी बकरी को चुराना चाहते हैं । ठीक है, इनका इलाज मैं करूंगा ।' उसने मन ही मन सोचा ।

उसने सायं को अपनी दुकान बन्द करते ही उस बकरी को लिया और दुकान के पीछे अपने घर में देगची में डालकर अंगीठी पर रख दिया । रात को वह और उसकी पत्नी खाना खाकर निश्चिंत सो गए । लगभग आधी रात बीती । दोनों धूर्त बकरी को चुराने के लिए उसकी दुकान में घुस गए । उन्होंने सब तरफ़ उस बकरी की खोज की किन्तु उसका कहीं पता न चला । बाद में वे दोनों मानीको के घर में जा पहुंचे लेकिन घर में भी वह बकरी दिखाई न दी । तब क्रोके ने एक और उपाय सोचा । चुपके-चुपके वह मानीको की पत्नी

के बिस्तरे के पास पहुंचा और धीरे से उसके कान में कहा, "प्रिये, ज़रा बताना वह बकरी कहां रखी है, मुझे मिल नहीं रही ।"

पत्नी ने सोचा कि उसका पति ही उससे पूछ रहा है । झट नींद की खुमारी में उत्तर दिया, "क्या तुम सो रहे हो ? तुम्हें याद नहीं कि तुमने ही तो देगची में इसे बन्द करके अंगीठी के ऊपर रखा था ?" यह कह कर वह फिर चद्दर तानकर सो गई ।

वे दोनों धूर्त झट अंगीठी की तरफ गए । देगची में रखी बकरी को बाहर निकाला और घर से बाहर चल दिए । पहले क्रोके दरवाज़े के बाहर निकला, फिर क्रीके अपने कन्धों पर बकरी रखे हुए । घर के बाहर बागीचे में बड़ी अच्छी-अच्छी सब्जियां लगी थीं । इन्हें देखकर क्रीके के मुंह में पानी भर आया । वह झट क्रोके के पास पहुंचा और उससे कहने लगा—

"ज़रा इस बागीचे से कुछ सब्ज़ियां भी तोड़कर लेते चलो । इस तरह बकरी के एक टुकड़े के साथ सब्ज़ी पकाकर खाने में बहुत मज़ा रहेगा ।"

क्रोके वहीं बागीचे में सब्ज़ियां तोड़ने में लग गया और क्रीके कन्धे पर बकरी लादे आगे बढ़ गया । इस बीच मानीको की नींद खुल गई । उसने अपने घर में कुछ चीज़ों को अस्त-व्यस्त देखा । उसे शक हुआ कि चोर उसके घर में घुस आए लगते हैं । वह झट देगची में बकरी को देखने गया । देगची का ढकना खोलते ही दंग रह गया । बकरी वहां से गायब थी । उसने खिड़की से बाहर बागीचे में झांका । देखा कि क्रोके कुछ सब्ज़ियां तोड़-तोड़ कर इकट्ठी करने में लगा था । वह झट सब कुछ ताड़ गया । 'अब इनको बकरी और सब्ज़ियां चुराने का पाठ मैं पढ़ाता हूं,' उसने मन में सोचा ।

उसने झट-पट घर में पड़ी ताज़ी सब्जियों का एक गट्ठा उठाया और बिना क्रोके को पता चले एकदम दौड़कर सड़क पर जा पहुंचा । चार-छः तेज़ कदम उठाकर वह क्रीके के पास जा पहुंचा । अंधेरे में पीछे से ही क्रीके को बुलाते हुए उसने कहा—

"सुनो, यह लो सब्ज़ियों का गट्ठा । तुम थक गए होगे । अब बकरी मुझे पकड़ा दो ।"
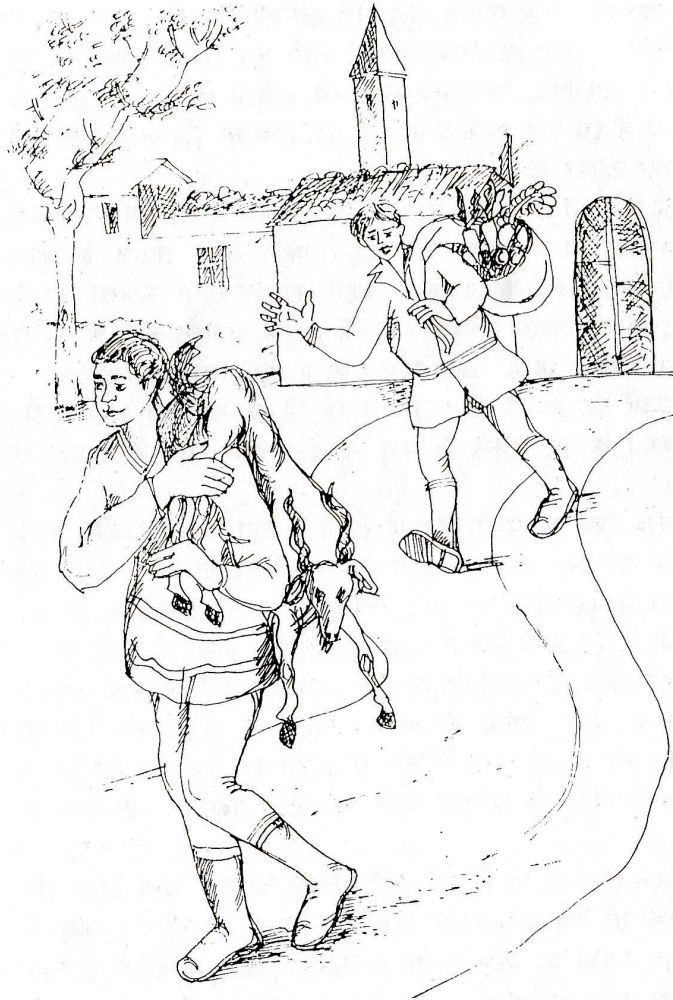
मानीको ने अंधेरे में पीछे से ही क्रोके को बुलाते हुए कहा "सुनो, यह लो सब्ज़ियों का गट्ठा । तुम थक गए होगे । अब बकरी मुझे पकड़ा दो ।"

क्रीके ने सोचा कि क्रोके सब्जियां लेकर आ पहुंचा है । उसने बिना पीछे मुड़कर देखे ही, बकरी मानीको को पकड़ा दी और सब्जियों का गट्ठा उससे ले लिया । मानीको ने बकरी को अपने कन्धों पर लादते ही सड़क के मोड़ से दूसरी दिशा ले ली और अपने घर जा पहुंचा । थोड़ी देर बाद क्रोके हाथ में सब्ज़ियों का गट्ठा लिए हुए क्रीके के पास पहुंचा । उसके कन्धों पर बकरी को गायब देखकर बोला—

"सुनो, बकरी को कहां पर रख आये हो ?"

"वह तो तेरे पास है ?"

"मेरे पास, मुझे तुमने कब दी थी ?"

"अरे याद नहीं, अभी थोड़ी देर पहले तूने मुझे यह सब्ज़ियों का गट्ठा दिया था और बकरी मुझसे ले ली थी ।"

"यह कैसे ? मेरी तोड़ी हुई सब्ज़ियों का गट्ठा तो मेरे पास है, यह दूसरा गट्ठा तुम्हें कौन दे गया ?"

आखिर दोनों धूर्त समझ गए कि यह मानीको ही हो सकता था जो उन्हें फिर झांसा देकर जीत गया था । सच, मानीको ही सबसे बड़ा धूर्त निकला ।

* * * * *